हर हर महादेव

लेखक एवं अनुवादक

सुरेश चौधरी

suresh choudhary prastuti
सुरेश चौधरी प्रस्तुति

हर हर महादेव
(चतुर्थ संशोधित संस्करण)

ISBN : 978-93-94660-08-3

प्रबंध कार्यालय :
516/4, बी.एल. साहा रोड, ग्राउंड फ्लोर
कोलकाता - 700038
मो. : 94324-19815
ई-मेल : enterprisesaa2019@gmail.com

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

चतुर्थ संस्करण 2023

©सर्वाधिकार लेखकाधीन

मूल्य : 225/-

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550-21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

A BOOK OF TRANSLATION OF VARIOUS SHLOKS ON SHIV
FROM SANSKRIT TO HINDI METERED POEMS

॥ ॐ ॥

ब्रह्मलीन स्वामी आचार्य
श्री धर्मेन्द्र जी महाराज
को समर्पित

अनुक्रमणिका

1.	स्व-कथ्य	06
2.	मन की बात (तृतीय संस्करण)	09
3.	मन की बात (चतुर्थ संस्करण)	10
4.	आचार्य धर्मेन्द्र का आशीर्वचन	12
5.	श्रावण मास	13
6.	शिव स्तुति	24
7.	हर हर महादेव	25
8.	महामृत्युंजय मंत्र	29
9.	शिव पंचाक्षर मंत्र	33
10.	द्वादश ज्योतिर्लिंग	36
11.	रावण रचित शिवताण्डवस्तोत्रम्	38
12.	शिव महिम्न स्तोत्र	47
13.	रूद्राष्टक	71
14.	शिव मानस पूजा स्तोत्र	74
15.	निर्वाण षटकम्	77
16.	विश्वनाथ अष्टकम्	81

17. श्रीशिवापराधक्षमापणस्तोत्रम् 83

18. शिव जी की बारात 90

19. नीलकण्ठ त्रिपुरारि 92

20. आदिशंकराचार्य रचित बहुचर्चित प्रख्यात आनंद लहरी का सरसी छंद 93

21. शिव को पुनः नील-कंठ 98

22. शिव और सती का प्रेम 99

23. भगवान शिव के 35 रहस्य 104

24. कनक मंजरी छन्द में एक स्तुति 113

25. आरती 115

26. परिचय 117

❍❍❍

स्व-कथ्य
(प्रथम संस्करण)

प्रिय सुधीजन

धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद की श्रृंखला में यह मेरी तीसरी पुस्तक है। इसके पहले श्री दुर्गा सप्तशती का भावानुवाद मैंने किया था, जिसे आप सुधीजनों ने बहुत पसंद किया, फिर मैंने 9 उपनिषद् एवं 2 वेदों के प्रमुख सूक्तों का प्रार्थना रूप में अनुवाद किया पुस्तक ''वेद से वेदांत तक'' में। चूँकि शिव जी हमारे आराध्य देव हैं एवं शिव का अर्थ ही कल्याण करने वाला होता है, अतः इनका वंदन तो सर्व कल्याणकारी है। प्रत्येक हिन्दू धर्मावलम्बी भगवन शिव की आराधना अवश्य करता है। त्रिदेव में शिव जी को प्रलयंकर कहा गया है, सृष्टि का विनाश इन्हीं के कहे होता है। प्रभु शिव शंकर आशु दानी भी हैं अर्थात् जरा सी मनुहार की नहीं की प्रसन्न हो जाते हैं, इसीलिए इन्हें आशुतोष भी कहते हैं। जब भी देवताओं पर कोई भी संकट आया, इनके पास गुहार लगाई और ये चले मदद करने को, इसी प्रकार जब समुद्र मंथन में विष निकला तब समस्या यह आन पड़ी कि इसे कौन ग्रहण करें तब शिव जी याद आये, क्योंकि ये ही औघड़दानी हैं, सर्प-बिच्छू इनके पालित हैं अतः विष ये ही पचा सकते हैं, इन्होंने उठाया विष का प्याला और पी लिया पर उस गरल को कंठ से नीचे लेते तो मुश्किल थी, अतः उसे कंठ में ही रोक लिया। गरल के प्रभाव से कंठ नीलवर्ण हो गया, तब से उन्हें नीलकंठ कहा जाने लगा। रावण इनका प्रिय भक्त था, उसने तो शिव जी को मस्तक काट-काट चढ़ाया था, उससे खुश हो उसे वर दे दिया। अब रावण उन्हें ही हिमालय से उठा लंका ले जाने

लगा तब भगवन विष्णु मार्ग में आये और इनके उदर में वरुण देव को प्रवेशित कर दिया। बहुत जोरों की लघु शंका होने लगी तभी विष्णु बालक के रूप में आये, रावण ने उन्हें शिव जी को पकड़ने को कहा और यह भी कहा की अगर इसे भूमि पर रख दिया तो फिर ये यहीं रह जायेंगे, यह कह रावण लघुशंका को गया, पेट में वरुण होने के कारण शंका रुक ही नहीं रही थी, पूरा तालाब बन गया पर लघुशंका न रुकी। तब विष्णु जी ने जोर से कहा की अब वह थक गया, अब वह शिवलिंग को नहीं पकड़ सकता। जल्दी आओ, पर रावण तो फंस गया, अत: न आ सका। बालक ने वहीं शिवलिंग रखा और चल दिया, वह स्थान अब देवघर के नाम से जाना जाता है। शिवजी के बारह ज्योर्तिलिंग में से एक वहां हैं। इस प्रकार अनंत कथाएं हैं। पुष्पदंत की कथा भी इस पुस्तक में दी गयी है, जिन्होंने महिम्न लिखा। कहते हैं सच्चे मन से श्रद्धा एवं शुद्ध भाव से पथ किया हुआ महामृत्युंजय मंत्र आती मौत को रोक देता है, इसे विधि-विधान से किया जाना चाहिए। शिव को देवों के देव कहते हैं, इन्हें महादेव, भोलेनाथ, शंकर, महेश, रूद्र, नीलकंठ के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक हैं। वेद में इनका नाम रूद्र है। यह व्यक्ति की चेतना के अन्तर्यामी हैं। इनकी अर्धाङ्गिनी (शक्ति) का नाम पार्वती है। इनके पुत्र कार्तिकेय और गणेश हैं तथा पुत्री अशोक सुंदरी हैं। शिव अधिकतर चित्रों में योगी के रूप में देखे जाते हैं और उनकी पूजा शिवलिंग तथा मूर्ति दोनों रूपों में की जाती है। शिव के गले में नाग देवता विराजित हैं और हाथों में डमरू और त्रिशूल लिए हुए हैं। कैलाश में उनका वास है। शिव में परस्पर विरोधी भावों का सामंजस्य देखने को मिलता है। शिव के मस्तक पर एक ओर चंद्र है तो दूसरी ओर महाविषधर सर्प भी उनके गले का हार है। वे अर्धनारीश्वर होते हुए भी कामजनित हैं। गृहस्थ होते हुए भी श्मशानवासी, वीतरागी हैं। सौम्य, आशुतोष होते हुए भी भयंकर रूद्र हैं।

शिव परिवार भी इससे अछूता नहीं हैं। उनके परिवार में भूत-प्रेत, नंदी, सिंह, सर्प, मयूर व मूषक सभी का समभाव देखने को मिलता है। वे स्वयं द्वंद्वों से रहित सह-अस्तित्व के महान विचार का परिचायक हैं। ऐसे महाकाल शिव की आराधना का महापर्व है शिवरात्रि।

प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी शिवरात्रि कहलाती है, लेकिन फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी महाशिवरात्रि कही गई है। इस दिन शिवोपासना भुक्ति एवं मुक्ति दोनों देने वाली मानी गई है, ज़्योंकि इसी दिन अर्धरात्रि के समय भगवान शिव लिंगरूप में प्रकट हुए थे।

माघकृष्ण चतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिंगतयोद्भूतः कोटि सूर्य समप्रभ॥

भगवान शिव अर्धरात्रि में शिवलिंग रूप में प्रकट हुए थे, इसलिए शिवरात्रि व्रत में अर्धरात्रि में रहने वाली चतुर्दशी ग्रहण करनी चाहिए। कुछ विद्वान प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी शिवरात्रि व्रत में ग्रहण करते हैं। नारद संहिता में आया है कि जिस तिथि को अर्धरात्रि में फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी हो, उस दिन शिवरात्रि करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। जिस दिन प्रदोष व अर्धरात्रि में चतुर्दशी हो, वह अति पुण्यदायिनी कही गई है।

आशा है शिव के विभिन्न आराधन श्लोकों, मंत्रों का यह अनुवाद आप सबको अवश्य पसंद आयेगा।

मन की बात

(तृतीय संस्करण)

देवों के देव महादेव की कृपा है कि उनकी आराधना की यह पुस्तिका देखते ही देखते तृतीय संस्करण की और अग्रसर हो गयी। यथासंभव प्रयास किया है कि त्रुटियां दूर हों, फिर भी मानव हूं त्रुटियां संभाव्य हैं।

इस संस्करण में निर्वाण षटकम् को जोड़ा है जो कि आदिशंकर की अमर कृति है। शिव तांडव स्तोत्र के अनुवाद में कई मित्रों ने सुझाव दिए की कई शब्द ऐसे हैं जो मूल संस्कृत के हैं, अत: उन्हें भी यथासंभव सुधारने का प्रयास किया है। मूल श्लोकों के छंद को (पंच चामर - अनंग शेखर) को यथावत रखते हुए उसी छंद में अनुवाद एक दुस्साहस ही माना जायेगा। आशा है आपको यह पसंद आएगा। इसे सिद्ध गायक द्वारा गा कर भी **यू ट्यूब** में डालने का प्रयास हो रहा है।

आप **"sureshchoudharyprastuti"** चैनल पर इसे सुन सकेंगे।

आशा है यह संस्करण आपको पसंद आयेगा। आपकी प्रतिक्रिया मेरा उत्साहवर्धन करेगी।

आपका सुरेश चौधरी

अक्षय तृतीया संवत् 2077

मन की बात
(चतुर्थ संस्करण)

"हर हर महादेव" आशुतोष अभ्यंकर महादेव शिव की यथा उपलज़्ध जानकारी अनुसार समग्र सामग्री युक्त पुस्तक है। प्रथम संस्करण के बाद हर संस्करण में कुछ न कुछ सुधार हुआ है, परंतु इस चतुर्थ संस्करण में यथासंभव त्रुटियों को दूर करने का प्रयास है। इसके साथ कुछ प्रचलित शिव श्लोक जैसे आनंद लहरी/शिव क्षमा स्तोत्रं इत्यादि का भी अनुवाद छंदों में किया है, उसे भी जोड़ा गया है। कुछ पुराने अनुवादों में लय की या स्पष्टता की कमी थी, उसे भी दूर करने का प्रयत्न हुआ है खासकर शिव तांडव एवं शिव मानस में।

भगवान आशुतोष सृष्टि के संहारक बताए जाते हैं। अत: इन्हें प्रलयंकर भी संबोधित करते हैं, परंतु मेरा ऐसा मानना है एवं शास्त्रों में भी शिव को परम वैज्ञानिक देव माना गया है। ये सृष्टि के नियामक भी हैं और निर्देशक भी।

कुछ आलेख जो गूगल पर उपलज़्ध थे या किसी के द्वारा मुझे भेजे गए और मुझे लगा कि जनसामान्य तक पहुंचने चाहिए, उन्हें भी इसमें प्रस्तुत किया गया है। मैं उनके मूल लेखक को साधुवाद देता हूँ और अग्रिम क्षमा मांगता हूँ कि बिना उनकी स्वीकृति के इसे संलग्न किया गया। परन्तु यह मात्र जन-जन में जानकारी पहुंचाने के उद्देश्य से ही है और कोई अन्य उद्देश्य नहीं।

पहले संस्करण में रामजन्म भूमि के पथ प्रदर्शक स्वामी श्रेष्ठ आचार्य धर्मेन्द्र जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। आयु जन्य रोगों के वश वे श्री हरि

के चरणों मे शरणागत हो चले। उन्हें यह पुस्तक समर्पित करता हूँ और ईश्वर से उनकी कीर्ति अक्षुण्ण रखने की प्रार्थना करता हूँ।

इस बार गुरुदेव पंडित श्रीकांत शर्मा बालव्यास जी जिनका परम् स्नेह मुझे प्राप्त है, से निवेदन किया कि उनके आशीर्वाद बिना मेरा लेखन अधूरा है। पूर्व में भी उन्होंने मेरी कई आध्यत्मिक धार्मिक पुस्तकों को आशीर्वाद दिया है। उन्होंने मुझे उपकृत किया। मैं उनको हृदय से नमन करता हूँ, गुरुदेव यूँ ही कृपा बनाएं रखें।

आशा है प्रस्तुत संस्करण आपको पसंद आएगा। अगर कोई भी त्रुटि दिखे तो नि:संकोच सूचित कीजियेगा ताकि अगले संस्करण में सुधार हो सके।

आपका सुरेश चौधरी

गुरु पूर्णिमा, विक्रम संवत् 2080

आचार्य स्वामी धर्मेन्द्र जी महाराज

पंच खंड पीठाधीश्वर
विराटनगर, जी : जयपुर-303102 (राजस्थान)

॥ श्री राम समर्थ ॥

''राम! तुम्हारा वृत स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है''

भगवान् भूतभावन महाकाल महेश्वर श्री शंकर की
दिव्य रचनाओं को जनभाषा में प्रस्तुत करके
कवि सुरेश कुमार चौधरी 'इंदु'
की लेखनी धन्य हुई है।
प्रभु की अमृतमयी अनुकंपा उन पर सर्वदा बनी रहे।

श्री धर्मेन्द्र
मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया, 2073 वि.

श्रावण मास

पवित्र श्रावण मास का विशेष महत्व है। इस वर्ष श्रावण में अधिक मास जिसे मलमास या पुरुषोज़म मास भी कहते हैं, वह भी इसी महीने प्रारंभ हो रहा है। साल 2023 का श्रावण मास दो महीने का होगा। यह महीना शिव जी को प्रसन्न करने हेतु बहुत महत्वपूर्ण है। शिव जी की महिमा ही कुछ अलग है। भगवान शिवशंकर करोड़ों सूर्य के समान दीप्तिमान हैं, जिनके ललाट पर चन्द्रमा शोभायमान है। नीले कण्ठ वाले, अभिष्ट वस्तुओं को देने वाले हैं। तीन नेत्रों वाले शिव, काल के भी काल महाकाल हैं। कमल के समान सुन्दर नयनों वाले अक्षमाला और त्रिशूल धारण करने वाले अक्षर-पुरुष हैं। यदि क्रोधित हो जाएं तो त्रिलोक को भस्म करने के शक्ति रखते हैं और यदि किसी पर दया कर दें तो त्रिलोक का स्वामी भी बना सकते हैं। यह भयावह भव सागर पार कराने वाले समर्थ प्रभु हैं। भोलेनाथ बहुत ही सरल स्वभाव, सर्वव्यापी और भक्तों से शीध्र ही प्रसन्न होने वाले देव हैं। उनके सामने मानव ज़्या दानव भी वरदान मांगने आये जो उसे भी मुंह मांगा वरदान देने में पीछे नही हटते हैं।

हिन्दू कैलेंडर के अनुसार चैत्र मास के शुरू होने के बाद पांचवां मास श्रावण मास का है। देवषयन का यह प्रथम चातुर्मास है। इस मास में कथा भागवत और अनगिनत उत्सव मनाये जाते हैं। श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को श्रावण सोमवार कहा जाता है। श्रद्धालु पवित्र जल से शिवलिंग को स्नान कराते हैं। फूल-मालाओं से मूर्ति या शिवलिंग को पूजते हैं। मंदिर में 24 घंटे दीप जलते रहते हैं। उत्तर भारत के विभिन्न प्रान्तों से इस महीने शिवभक्त गंगाजल लेने यानी कांवड़ का पवित्र जल लेने हरिद्वार, ऋषिकेश, काशी, देवघर और गंगासागर की यात्रा पैदल करके श्रावण

कृष्ण चतुर्दशी को अपने क्षेत्र के शिव मन्दिर में शिवलिंग का अभिषेक करके पुण्य अर्जित करते हैं। कांवड़ लाकर रूद्राभिषेक करना बहुत ही कष्टसाध्य तप है, जिसे देवगण, मानव, दानव सहित यक्ष, किन्नर और साधुगण आदिकाल से करते आ रहे हैं। शिव सभी के लिए वरदाता हैं, जो जैसा मांगें उसे वैसी ही सम्पदा दे देते हैं।

श्रावण मास में आशुतोष भगवान शंकर की पूजा का विशेष महत्व है। जो प्रतिदिन पूजन न कर सकें, उन्हें सोमवार को शिव पूजा अवश्य करनी चाहिए और व्रत रखना चाहिए। सोमवार भगवान शंकर का प्रिय दिन है, अत: सोमवार को शिवाराधना करनी चाहिए। इसी प्रकार मासों में श्रावण मास भगवान शंकर को विशेष प्रिय है। अत: श्रावण मास में प्रतिदिन शिवोपासना का विधान है। श्रावण में पार्थिव शिव पूजा का विशेष महत्त्व है। अत: इस महीने शिव पूजा या पार्थिव शिव पूजा अवश्य करना चाहिए।

इस मास में लघुरुद्र, महारुद्र अथवा अतिरुद्र पाठ कराने का भी विधान है। श्रावण मास में जितने भी सोमवार पड़ते हैं, उन सब में शिवजी का व्रत किया जाता है। इस व्रत में प्रात: गंगा स्नान अथवा किसी पवित्र नदी या सरोवर में अथवा विधिपूर्वक घर पर ही स्नान करके शिव मन्दिर में जाकर स्थापित शिवलिंग या अपने घर में पार्थिव मूर्ति बनाकर यथाविधि षोड्शोपचार-पूजन किया जाता है। यथासम्भव विद्वान ब्राह्मण से रुद्राभिषेक भी कराना चाहिए। इस व्रत में श्रावण माहात्म्य, शिव महिम्न, रूद्र अष्टाध्यायी और श्रीशिवमहापुराण की कथा सुनने का विशेष महत्व है।

मनीषियों का कहना है कि समुद्र मंथन भी श्रावण मास में ही हुआ था। इस मंथन में 14 प्रकार के तत्व निकले। इसमें जहर को छोड़कर सभी 13 तत्वों को देवताओं और राक्षसों में वितरित किया गया।

इन सभी तत्वों में से निकले जहर को भगवान् शिव पी गये और इसे अपने कंठ में संग्रह कर लिया। इस प्रकार इनका नाम नील कंठ पढ़ा।

इसके बाद देवताओं ने भगवान शिव को जहर के संताप से बचाने के लिए उन्हें गंगाजल अर्पित किया। इसके बाद से ही शिव भक्त श्रावण मास में भगवान शिव का जलाभिषेक करते हैं।

श्रावण मास भगवान शिव का प्रिय मास है। इसलिए भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए अपनाएं कुछ जरूरी बातें—

— श्रावण मास में रूद्राक्ष पहनना बहुत ही शुभ माना गया है। इसलिए पूरे मास रूद्राक्ष की माला धारण करें व रूद्राक्ष माला का जाप करें।
— शिव को भभूती लगावें। अपने मस्तक पर भी लगावें।
— शिव चालीसा और आरती का गायन करें।
— महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें।
— सोमवार को श्रद्धापूर्वक व्रत धारण करें। (यदि पूरे दिन का व्रत सम्भव न हो तो सूर्यास्त तक भी व्रत धारण किया जा सकता है)
— बेलपत्र, दूध, शहद और पानी से शिवलिंग का अभिषेक करें।

अंत में एक शिव स्तुति

कुंदइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभिष्ठसिद्धिदम।
कारुणिककलकन्ज्लोचनम नौमी शंकरमनंगमोचनं॥

नमामि प्रलयंकरम नमामि महादेव आशुतोष अभयंकरम।
नमामि उमापति जगतपति जय शम्भूः कैवल्यमपि दुर्लभं॥

गंग शंख चन्द्र मौली शोभितम, नाग शार्दुलचम्राम्बरम।
कल्याण कल्प वृक्ष कृतं गिरिजापति कन्दर्पह्म शंकरं॥

नित्यगुरुम ज्ञानवर्धनम सृष्टिसंहारनम वन्दे परम शिव।
त्रिगुनातित ताप त्रय विनाशम भुजंगगल शोभितं वन्दनम॥

(कुछ तथ्य गूगल से साभार)

कर्पूर जैसा गौर रंग है जिनका गल सर्प का हार
करुणा के वे अवतार हैं संसार का यह है सार
बसंत की भांति हृदय वास कर लाते सर्वदा बहार
मां भवानी सहित भावेश करता नमन बारम्बार॥

प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी शिवरात्रि कहलाती है, लेकिन फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी महाशिवरात्रि कही गई है। इस दिन शिवोपासना भुक्ति एवं मुक्ति दोनों देने वाली मानी गई है, क्योंकि इसी दिन अर्धरात्रि के समय भगवान शिव लिंगरूप में प्रकट हुए थे।

माघकृष्ण चतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिंगतयोद्रूतः कोटि सूर्य समप्रभ॥

नारद संहिता में आया है कि जिस तिथि को अर्धरात्रि में फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी हो, उस दिन शिवरात्रि करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। जिस दिन प्रदोष व अर्धरात्रि में चतुर्दशी हो, वह अति पुण्यदायिनी कही गई है।

सागर-मंथन की कथा से शिव का रूप निखरता है। ऋग्वेद में जहॉ सूर्य, वरुण, वायु, अग्नि, इंद्र आदि प्राकृतिक शक्तियों की उपासना है, वहीं रूद्र का भी उल्लेख है। पर विनाशकारी शक्तियों के प्रतीक रूद्र गौण देवता थे। सागर-मंथन के बाद शायद रूद्र नए रूप में शिव बने।

शिव तथा शंकर दोनों का अर्थ कल्याणकारी होता है। अंतिम विश्लेषण में विध्वंसक शक्ति कल्याणकारी भी होती है - यदि वह न हो तो जिंदगी भार बन जाय और दुनिया बसने के योग्य न रहे। आखिर कालकूट पीनेवाले ने समाज का महान कल्याण किया।

शिव का रूप विचित्र अमंगल है। नंग-धड़ंग, शरीर पर राख मले, जटाजूटधारी, सर्प लपेटे, गले में हड्डियों एवं नरमूंडों की माला और जिसके भूत-प्रेत, पिशाच आदि गण हैं। ये औघड़दानी सभी के लिए सुगम्य थे। देव तथा असुर सभी को बिना सोचे समझे वरदान दे बैठते।

शिव का चिह्न मानकर शिवलिंग की पूजा बुद्ध के कालखंड के पूर्व आई। वनवासी से लेकर सभी साधारण व्यक्ति जिस चिह्न की पूजा कर सकें, उस पत्थर के ढेले, बटिया को शिव का चिह्न माना। विक्रम संवत् के कुछ सहस्राब्दी पूर्व उल्कापात का अधिक प्रकोप हुआ। आदि मानव को यह रूद्र का आविर्भाव दिखा। शिवपुराण के अनुसार उस समय आकाश से ज्योति पिंड पृथ्वी पर गिरे और उनसे थोड़ी देर के लिए प्रकाश फैल गया। यही उल्का पिंड बारह ज्योतिर्लिंग कहलाए। इसी कारण उल्कापिंड से आकार में मिलती बटिया रूद्र या शिव का प्रतीक बनी। निराकार त्रिमूर्ति शिव हैं, जो स्थापना, पालना, और मिटाना जैसे दिव्य कर्तव्यों के पालन के लिए क्रमशः ब्रह्मा-विष्णु-महेश की संरचना करते हैं, बिल पत्र के तीन पत्ते तीन मूर्तियों के द्योतक हैं, शिवलिंग पर घड़े से बूंद-बूंद टपकता जल अध्यात्मिक रहस्य मात्र है, सच्चे स्नेह सहित परमात्मा शिव से बुद्धि रूपी कलश से भरे ज्ञान रूपी अमृत के बिन्दुओं का तादाम्य शिव परमात्मा के प्रति समर्पित रहें। शिव को त्र्यंबकम् कहा गया है, ज़्योंकि उनके त्रिनेत्र हैं। चरम-चक्षुओं के अलावा मर्म-चक्षु याने आत्मा की आंखें पाने-खोलने का ही महापर्व है महाशिवरात्रि।

हे शिव कब कालकूट के प्रभाव से बाहर निकलोगे
कब भंग की तरंग से हो मुक्त अपने दर्शन दोगे
सस्मित देश की दहकती अन्तः ज्वाल शांत करने को
भारत विशाल के क्लेश कराल का धुम्रांत करने को
खोल चक्षु तृतीय कर मदन भस्म हिमगिरि से उतरोगे
हे शिव कब कालकूट के प्रभाव से बाहर निकलोगे

बांट दिया लोगों ने और हम बंट चुके हैं टुकड़ों में
मजहब धर्म ऊंच-नीच, जाति-उपजाति के लफड़ों में
मंदिर-मस्जिद और हिन्दू-मुस्लिम का भेद हटाने को
भारत में सत्यं शिवं सुन्दरं का पाठ पढ़ाने को
वसुदेव कुटुम्बकं का रहस्य आप कब हमें कहोगे
हे शिव कब कालकूट के प्रभाव से बाहर निकलोगे

भ्रष्टाचार अनाचार काम लोलुपता से है ग्रसित
पाश्चात्य सभ्यता में अपनी संस्कृति हुई अति दूषित
शुद्ध करने को डमरू नाद कर ओम ज्ञान सुनाने को
त्रस्त पस्त भारत जन के हृदय को हर्षित कराने को
गरल विचारों को नीलकंठ बन कब नाथ तुम हरोगे
हे शिव कब कालकूट के प्रभाव से बाहर निकलोगे

प्याला विष का पी शिव को पुनः नील-कंठ है बनाना
गरल आर्य भूमि का पी विचारों में परिवर्तन है लाना
पूर्ण करने तेरी आराधना, सफल करने प्रार्थना
अलखक्रांति की जला शुद्ध करो हर मनुज की भावना
भागीरथ प्रयत्न कर,चीर वक्ष का, कब प्रभु प्रकटोगे
हे शिव कब कालकूट के प्रभाव से बाहर निकलोगे

हे आर्यवीर क्यूं आज हुआ जा रहा अधीर, धीर हो तुम
परिवर्तन ग्राही निष्ठावान, ज्ञान वान, वीर हो तुम
स्वप्न नये लिए विश्व विजयी भारत की तकदीर हो तुम
सत्य हो शिव हो सुंदर हो स्वप्न प्रीत तूणीर हो तुम
मंदाकनी त्याग-प्रेम-उत्थान की है कब शुद्ध करोगे
हे शिव कब कालकूट के प्रभाव से बाहर निकलोगे

शिव मंदिर जो 4000 वर्ष से भी अधिक पुरातन हैं, उनमें एक बात समान है, केदारनाथ, कालाहस्ती, एकम्बरनाथ कांची, थिरुवमली, थिरुवबैकवाल, चिदंबरम नटराज, रामेश्वरम और कलेश्वरं। सब शिव मंदिर 79 डिग्री अक्षांश पर स्थित है। सोचने की बात है कि 4000 वर्ष पूर्व कैसे पता चला कैसे सीधी रेखा में मंदिर बने। यह 2383 कि.मी. की दूरी को एक सीधी रेखा में खिंचना आश्चर्य से कम नहीं।

ये सभी मंदिर पंच तत्व को बतलाते हैं-कालाहस्ती को वायु लिंग, थिरुवनिक्क को जल लिंग, अन्नामलाई को अग्नि लिंग, कांचीपुरम को भूमि लिंग, चिदंबरम को आकाश लिंग माना जाता है।

जब आधुनिक वैज्ञानिकों ने अर्थ सर्वे किया तो उस सीधी रेखा को सबसे ज्यादा रेडियो एक्टिव पाया। इसके अलावा जो 12 ज्योर्तिलिंग है वे

ऊं के आकार में हैं, वे भी सर्वाधिक रेडियो एक्टिव हैं। ज़्यों रेडियो एक्टिव जगह को शिव के मंदिर के रूप में बनाया गया एवं शिव लिंग का आकर ज़्यों नुक्लेयर रिएक्टर का होता है, यह सोचनीय है।

एक आश्चर्यजनक बात और देखने को मिली की इनकी दूरी सभी ज्योर्तिलिंग की उज्जैन से 111 के गुणन में है और 2054 वर्ष पूर्व उज्जैन को पृथ्वी का केंद्र ऐसे ही नहीं कहा गया।

- Ujjain to Somnath - 777 kms
- Ujjain to Omkareshwar - 111 + kms
- Ujjain to Bhimashankar - 666 kms
- Ujjain to Kashi Vishwanath - 888 kms
- Ujjain to Mallikarjun - 888 kms
- Ujjain to Kedarnath - 1111 kms
- Ujjain to Tryambakeshwar - 555 kms
- Ujjain to Badyanath - 1399 kms
- Ujjain to Rameswaram - 1999 kms

अंत में शिव तांडव का हिंदी अनुवाद मेरे द्वारा जिसे गाया है कुमार सुरोजित ने। मूल छंद अनंग शेखरं में है और अनुवाद भी अनंग शेखरं में। अवश्य सुनें।

शिव जी की एक स्तुति प्रार्थना पुस्तक हर हर महादेव से उधृत।

आज 17 जून से अधिक मास प्रारंभ है, उसकी एक कथा प्रचलित है, जो पुराणों में वर्णित है, वह कथा है—

पुरुषोत्तम मास की उत्पत्ति कथा—

हर वैष्णव को यह पढ़ना ही चाहिये।

प्रत्येक राशि, नक्षत्र, करण व चैत्रादि बारह मासों के सभी के स्वामी है, परन्तु मलमास का कोई स्वामी नही है। इसलिए देव कार्य, शुभ कार्य एवं पितृ कार्य इस मास में वर्जित माने गये है।

इससे दुखी होकर स्वयं मलमास (अधिक मास) बहुत नाराज व उदास रहता था, इसी कारण सभी ओर उसकी निंदा होने लगी। मलमास को सभी ने असहाय, निन्दक, अपूज्य तथा संक्रांति से वर्जित कहकर लज्जित किया। अत: लोक-भर्त्सना से चिन्तातुर होकर अपार दु:ख समुद्र में मग्न हो गया। वह कान्तिहीन, दु:खों से युक्त, निंदा से दु:खी होकर मलमास भगवान विष्णु के पास वैकुण्ठ लोक में पहुंचा।

मलमास बोला - हे नाथ, हे कृपानिधे! मेरा नाम मलमास है। मैं सभी से तिरस्कृत होकर यहां आया हूं। सभी ने मुझे शुभ-कर्म वर्जित, अनाथ और सदैव घृणा-दृष्टि से देखा है। संसार में सभी क्षण, लव, मुहूर्त, पक्ष, मास, अहोरात्र आदि अपने-अपने अधिपतियों के अधिकारों से सदैव निर्भय रहकर आनन्द मनाया करते हैं। मैं ऐसा अभागा हूं जिसका न कोई नाम है, न स्वामी, न धर्म तथा न ही कोई आश्रम है। इसलिए हे स्वामी! मैं अब मरना चाहता हूं। ऐसा कहकर वह शान्त हो गया।

भगवान मलमास को लेकर गोलोक धाम गए, वहां भगवान श्रीकृष्ण मोरपंख का मुकुट व वैजयंती माला धारण कर स्वर्णजड़ित आसन पर बैठे थे। गोपियों से घिरे हुए थे।

भगवान ने मलमास को श्रीकृष्ण के चरणों में नतमस्तक करवाया व कहा - यह मलमास वेद-शास्त्र के अनुसार पुण्य कर्मों के लिए अयोग्य माना गया है, इसीलिए सभी इसकी निंदा करते हैं।

श्रीकृष्ण ने कहा – हे हरि! आप इसका हाथ पकड़कर यहां लाए हो, जिसे आपने स्वीकार किया, उसे मैंने भी स्वीकार कर लिया है। इसे मैं अपने ही समान करूंगा तथा गुण, कीर्ति, ऐश्वर्य, पराक्रम, भक्तों को वरदान आदि मेरे समान सभी गुण इसमें होंगे। मेरे अन्दर जितने भी सद्‌गुण है, उन सभी को मैं मलमास तुम्हें सौंप रहा हूं। मैं इसे अपना नाम 'पुरुषोत्तम' देता हूं और यह इसी नाम से विख्यात होगा। यह मेरे समान ही सभी मासों का स्वामी होगा। अब से कोई भी मलमास की निंदा नहीं करेगा। मैं इस मास का स्वामी बन गया हूं। जिस परमधाम गोलोक को पाने के लिए ऋषि तपस्या करते हैं, वही दुर्लभ पद पुरुषोत्तम मास में स्नान, पूजन, अनुष्ठान व दान करने वाले को सरलता से प्राप्त हो जाएंगे। इस प्रकार मलमास पुरुषोत्तम मास के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यह मेरे समान ही सभी मासों का स्वामी होगा। अब यह जगत को पूज्य व नमस्कार करने योग्य होगा।

यह इसे पूजने वालों के दु:ख-दरिद्रता का नाश करेगा। यह मेरे समान ही मनुष्यों को मोक्ष प्रदान करेगा। जो कोई इच्छा रहित या इच्छा वाला इसे पूजेगा वह अपने किए कर्मों को भस्म करके नि:संशय मुझ को प्राप्त होगा।

सब साधनों में श्रेष्ठ तथा सब काम व अर्थ का देने वाला यह पुरुषोत्तम मास स्वाध्याय योग्य होगा। इस मास में किया गया पुण्य कोटि गुणा होगा, जो भी मनुष्य मेरे प्रिय मलमास का तिरस्कार करेंगे और जो धर्म का आचरण नहीं करेंगे, वे सदैव नरक के गामी होंगे। अत: इस मास में स्नान, दान, पूजा आदि का विशेष महत्व होगा।

इसलिए हे रमापते! आप पुरुषोत्तम मास को लेकर वैकुण्ठ को जाओ।

इस प्रकार वैकुण्ठ में स्थित होकर वह अत्यन्त आनन्द करने लगा तथा भगवान के साथ विभिन्न क्रीड़ाओं में मग्न हो गया। इस प्रकार श्रीकृष्ण ने मन से प्रसन्न होकर मलमास को बारह मासों में श्रेष्ठ बना दिया तथा वह सभी का पूजनीय बन गया। अत: श्रीकृष्ण से वर पाकर इस भूतल पर वह पुरुषोत्तम नाम से विख्यात हुआ।

इस साल अधिकमास (मलमास) पड़ने के कारण लगभग सभी व्रत और त्योहार आम सालों की अपेक्षा कुछ जल्दी पड़ेंगे। 2025 में अधिकमास अर्थात् पुरुषोत्तम मास के कारण दो आषाढ़ होंगे।

॥ जय पुरुषोत्तम भगवान जय श्रीकृष्ण॥

शिव स्तुति

नमामि प्रलयंकरम नमामि महादेव आशुतोष अभयंकरम।
नमामि उमापति जगतपति जय शम्भूः कैवल्यमपि दुर्लभं॥

गंग शंखचन्द्र मौली शोभितम,नागशार्दुलचम्राम्बरम।
कल्याण कल्प वृक्ष कृतं गिरिजापति कन्दर्पह्म शंकरं॥

नित्यगुरुम ज्ञानवर्धनम सृष्टिसंहारनम वन्दे परम शिव।
त्रिगुनातित ताप त्रय विनाशमभुजंगगल शोभितं वन्दनम॥

***

नमामि प्रलयंकर, नमामि शंकर, हे नाथ विध्वंसकारी
हे प्रभु मृत्युंजय, हे शिव निर्भय, हे गंगाधर त्रिपुरारी
मृत्यु के प्रदाता, जीवन दाता, रक्षा हो नाथ त्रयम्बकम
नमामि कैलासा, बुद्धि विकासा, आशुतोष रक्षम रक्षम

धरेंद्र नंदिनिस्यम, गंग जटास्यम, शोभितम भुजंग पिंगले
तांडव प्रताडीतम, चन्द्र शेखरम, दग्ध कराल भाल कपिले
हिम खंड दंडितम, प्रकृति विघटनम, प्रचंड गंगा प्रवाहिते
केदार रक्षिते, तांडव रचिते, सदा शिवम् भजिते भजिते

❍❍❍

हर हर महादेव

सागर-मंथन की कथा से शिव का रूप निखरता है। ऋग्वेद में जहां सूर्य, वरुण, वायु, अग्नि, इंद्र आदि प्राकृतिक शक्तियों की उपासना है, वहीं रूद्र का भी उल्लेख है, पर विनाशकारी शक्तियों के प्रतीक रूद्रगौण देवता थे। सागर-मंथन के बाद शायद रूद्र नए रूप में शिव बने।

शिव तथा शंकर दोनों का अर्थ कल्याणकारी होता है। अंतिम विश्लेषण में विध्वंसक शक्ति कल्याणकारी भी होती है। यदि वह न हो तो जिंदगी भार बन जाए और दुनिया बसने के योग्य न रहे। आखिर कालकूट पीने वाले ने समाज का महान कल्याण किया।

शिव का रूप विचित्र अमंगल है। नंग-धड़ंग, शरीर पर राख मले, जटाजूटधारी, सर्प लपेटे, गले में हड्डियों एवं नरमूंडों की माला और जिसके भूत-प्रेत, पिशाच आदि गण हैं। ये औघड़दानी सभी के लिए सुगम्य थे। देव तथा असुर सभी को बिना सोचे समझे वरदान दे बैठते।

शिव का चिह्नक मानकर शिवलिंग की पूजा बुद्ध के कालखंड के पूर्व आई। वनवासी से लेकर सभी साधारण व्यक्ति जिस चिह्न की पूजा कर सकें, उस पत्थर के ढेले, बटिया को शिव का चिह्न माना। विक्रम संवत् के कुछ सहस्राज़्दी पूर्व उल्कापात का अधिक प्रकोप हुआ। आदि मानव को यह रूद्र का आविर्भाव दिखा। शिव पुरण के अनुसार उस समय आकाश से ज्योति पिंड पृथ्वी पर गिरे और उनसे थोड़ी देर के लिए प्रकाश फैल गया। यही उल्कापिंड बारह ज्योर्तिलिंग कहलाए। इसी कारण उल्कापिंड से आकार में मिलती बटिया रूद्र या शिव का प्रतीक बनी। निराकार त्रिमूर्ति शिव हैं, जो स्थापना, पालना और मिटाना जैसे दिव्य कर्तव्यों के पालन के लिए क्रमश: ब्रह्मा-विष्णु-महेश की संरचना करते हैं, बिल्व

पत्र के तीन पत्ते तीन मूर्तियों के द्योतक हैं, शिवलिंग पर घड़े से बूंद-बूंद टपकता जल अध्यात्मिक रहस्य मात्र है, सच्चे स्नेह सहित परमात्मा शिव से बुद्धि रूपी कलश से भरे ज्ञान रूपी अमृत के बिन्दुओं का तादातम्य शिव परमात्मा के प्रति समर्पित रहें। शिव को त्र्यम्बक कहा गया है, ज़्योंकि उनके त्रिनेत्र हैं, चरम-चक्षुओं के अलावा मर्म-चक्षु याने आत्मा की आंखें पाने-खोलने का ही महापर्व है महाशिवरात्रि।

लिंग-प्रतीक से शिव की पूजा ज़्यों की जाती है? यह प्रश्न ऋषियों ने सूतजी से, जिनका उल्लेख शिव पुराण में है। ब्रह्म कुमार सनत्कुमार ने भी नंदकेश्वर से भी यही प्रश्न किया था। ऋषियों की शंका का निवारण सूतजी ने अपने गुरु वेदव्यास से सूनी कथा का वर्णन किया है। उन्होंने ऋषियों को संबोधित किया की एकमात्र भगवान् शिव ही उनके निराकार स्वरूप का प्रतीक है, जब ब्रह्मा एवं विष्णु के विवाद को सुलझाने शिव जी के पास आये तो शिव एक विस्तृत ज्योति पुंज के रूप में प्रकट हुए, बाद में धीरे-धीरे वह पुंज लुप्त हो गया एवं वही पुंज लिंगाकार रूप में पूजा जाता है।

अग्नि-पुराण (53.3-5) में विस्तृत विवरण किया गया है, शिवलिंग स्वयं में मंडल है, जिसका आधार रूप तीन स्तर होते हैं, जो मिट्टी में दबे रहते हैं, ये तीन स्तर तीन लोकों को दर्शाते हैं, उन पर आश्रित 14 भुवन के प्रतीक हैं।

उपरी दोनों भाग स्थित अथार्थ ब्रह्मा के क्षेत्र माने जाते हैं, तत्पश्चात् अष्ट-दिक् आधार विष्णु के पालनकर्ता का प्रतीक है, इसके ऊपर मातृत्व बिम्ब है, जिसके मध्य में पिंड आकार शिवलिंग अनंतता का सूचक है, जो संहार की स्थिति है, अत: सृष्टि, स्थिति, संहार तीनों का समन्वय स्वरूप शिवलिंग है।

किंवदंती है कि शिव का पहला विवाह दक्ष प्रजापति की कन्या सती से हुआ था। प्रजापतियों के यज्ञ में दक्ष ने घमंड में शाप दिया, 'अब इंद्रादि

देवताओं के साथ इसे यज्ञ का भाग न मिले।' और क्रोध में चले गये। तब नंदी (शिव के वाहन) ने दक्ष को शाप देने के साथ-साथ यज्ञकर्ता ब्राह्मणों को, जो दक्ष की बातें सुनकर हंसे थे, शाप दिया, 'जो कर्मकांडी ब्राह्मण दक्ष के पीछे चलने वाले हैं, वे केवल पेट पालने के लिए विद्या, तप, व्रतादि का आश्रय लें तथा धन, शरीर और इंद्रिय-सुख को ही सुख मानकर इन्हीं के गुलाम बनकर दुनिया में भीख मांगते भटकें। इस पर भृगु ने शाप दिया, 'जो शौचाचारविहीन, मंदबुद्धि तथा जटा, राख और हड्डियों को धारण करने वाले हों वे ही शैव संप्रदाय में दीक्षित हों, जिनमें सुरा और आसव देवता समान आदरणीय हों। तुम पाखंड मार्ग में जाओ, जिनमें भूतों के सरदार तुम्हारे इष्टदेव निवास करते हैं।' जैसे कर्मकांडी ब्राह्मण या जैसी तांत्रिक क्रियाएं शैव संप्रदाय में बाद में आई, ये श्राप उनका संकेत करते हैं।

अधिक समय बीतने पर दक्ष ने महायज्ञ किया। उसमें सभी को बुवाया, पर अपनी प्रिय पुत्री सती एवं शिव को नहीं। सती का स्त्री-सुलभ मन नहीं माना और मना करने पर भी अपने पिता दक्ष के यहां गई। पर पिता द्वारा शिव की अवहेलना से दु:खित होकर सती ने प्राण त्याग दिए। जब शिव ने यह सुना तो एक जटा से अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हजारों भुजाओं वाले रूद्र के अंश-वीरभद्र को जन्म दिया। उसने दक्ष का महायज्ञ विध्वंस कर डाला। शिव ने अपनी प्रिया सती के शव को लेकर भयंकर संहारक तांडव किया। जब संसार जलने लगा और किसी का कुछ कहने का साहस नहीं हुआ तब भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से शव का एक-एक अंश काट दिया। शव विहीन होकर शिव शांत हुए। जहां भिन्न-भिन्न अंग कटकर गिरे, वहां शक्तिपीठ बने। ये 108 शक्तिपीठ, जो गांधार (आधुनिक कंधार और ब्लूचिस्तान) से लेकर ब्रह्मदेश (आधुनिक म्यांमार) तक फैले हैं, देवी की उपासना के केंद्र हैं।

सती के शरीर के टुकड़े मानो इस मिट्टी से एकाकार हो गए-सती मातृरूपा भरतभूमि है। यही सती अगले जन्म में हिमालय की पुत्री पार्वती हुई (हिमालय की गोद में बसी यह भरतभूमि मानो उसकी पुत्री है)। शिव के उपासक शैव, विष्णु के उपासक वैष्णव तथा शक्ति (देवी) के उपासक शाक्त कहलाए। शिव और सती को लोग पुसत्व एवं मातृशक्ति के प्रतीक के रूप में भी देखते हैं। इस प्रकार का अलंकार प्राय: सभी प्राचीन सभ्यताओं में आता है। यह शिव-सती की कहानी शैव एवं शाक्त मतों का समन्वय भी करती है। शैव एवं वैष्णव मतों के भेद भारत के ऐतिहासिक काल में उठे हैं। इसकी झलक रामचरितमानस में मिलती है। शिव ने पार्वती को राम का परिचय 'भगवान' कहकर दिया, राम के द्वारा रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना हई। दोनों ने कहा कि उनका भक्त दूसरे का द्रोही नहीं हो सकता।

— सुरेश चौधरी 'इंदु'

महामृत्युंजय मंत्र

सम्पूर्ण मंत्र त्रिपुरा शक्ति कहलाता है, जिसका एक भाग गायत्री का दूसरा देवी महत्त का तीसरा महामृत्युंजय का है। पहले चरण में देवी की महत्ता को वर्णित किया गया है, फिर दूसरे चरण में देवी की शक्ति को तथा तीसरे चरण में महादेव महाकाल शिवशंकर की शक्ति को बताया गया है। पूर्ण मंत्र पढ़ने से कोई भी बाधा हो, उसका नाश होता है। महामृत्युंजय ओम त्र्यंबकम् मंत्र के 33 अक्षर हैं, जो महर्षि वशिष्ठ के अनुसार 33 देवताआं के द्योतक हैं। उन तैंतीस देवताओं में 8 वसु, 11 रूद्र और 12 आदित्य, एक प्रजापति तथा एक षट्कार हैं। इन तैंतीस देवताओं की सम्पूर्ण शक्तियां महामृत्युंजय मंत्र से निहित होती है जिससे महामृत्युंजय का पाठ करने वाला प्राणी दीर्घायु तो प्राप्त करता ही हैं, साथ ही वह निरोग, ऐश्वर्य युक्ता धनवान भी होता है। महामृत्युंजय का पाठ करने वाला प्राणी हर दृष्टि से सुखी एवं समृद्धिशाली होता है। भगवान शिव की अमृतमययी कृपा उस पर निरंतर बरसती रहती है।

त्रि - ध्रववसु प्राण का द्योतक है जो सिर में स्थित है।
यम - अध्ववरसु प्राण का द्योतक है, जो मुख में स्थित है।
ब - सोम वसु शक्ति का द्योतक है, जो दक्षिण कर्ण में स्थित है।
कम - जल वसु देवता का द्योतक है, जो वाम कर्ण में स्थित है।
य - वायु वसु का द्योतक है, जो दक्षिण बाहु में स्थित है।
जा - अग्नि वसु का द्योतक है, जो बाम बाहु में स्थित है।
म - प्रत्युवष वसु शक्ति का द्योतक है, जो दक्षिण बाहु के मध्य में स्थित है।
हे - प्रयास वसु मणिबन्धत में स्थित है।

सु – वीरभद्र रूद्र प्राण का बोधक है। दक्षिण हस्त के अंगुलि के मूल में स्थित है।

ग – शुम्भ् रूद्र का द्योतक है, दक्षिण हस्त् अंगुलि के अग्र भाग में स्थित है।

न्धिम् – गिरीश रूद्र शक्ति का मूल द्योतक है। बायें हाथ के मूल में स्थित है।

पु – अजैक पात रूद्र शक्ति का द्योतक है। बाम हस्त के मध्य भाग में स्थित है।

ष्टि – अहर्बुध्य्त् रूद्र का द्योतक है, बाम हस्त के मणिबन्धा में स्थित है।

व – पिनाकी रूद्र प्राण का द्योतक है। बायें हाथ की अंगुलि के मूल में स्थित है।

र्ध – भवानीश्वर रूद्र का द्योतक है, बाम हस्त अंगुलि के अग्र भाग में स्थित है।

नम् – कपाली रूद्र का द्योतक है। उरु मूल में स्थित है।

उ – दिक्पति रूद्र का द्योतक है। यक्ष जानु में स्थित है।

र्वा – स्थाणु रूद्र का द्योतक है जो यक्ष गुल्फ में स्थित है।

रु – भर्ग रूद्र का घोतक है, जो चक्ष पादांगुलि मूल में स्थित है।

क – धाता आदित्य का द्योतक है जो यक्ष पादांगुलियों के अग्र भाग में स्थित है।

मि – अर्यमा आदित्य का द्योतक है जो वाम उरु मूल में स्थित है।

व – मित्र आदित्य का द्योतक है जो वाम जानु में स्थित है।

ब – वरुणादित्या का बोधक है जो वाम गुल्फा में स्थित है।

न्धा – अंशु आदित्य का द्योतक है। वाम पादंगुलि के मूल में स्थित है।

नात् – भगादित्य का बोधक है। वाम पैर की अंगुलियों के अग्रभाग में स्थित है।

मृ – विवस्वन (सूर्य) का द्योतक है जो दक्ष पार्श्वि में स्थित है।

र्त्यो – दन्दाददित्य् का बोधक है। वाम पार्श्वि भाग में स्थित है।

मु – पूषादित्यं का बोधक है। पृष्ठै भगा में स्थित है।

क्षी – पर्जन्य् आदित्य का द्योतक है। नाभि स्थिल में स्थित है।

य – त्वणष्टान आदित्य का बोधक है। गुह्य भाग में स्थित है।

मां – विष्णुय आदित्य का द्योतक है, यह शक्ति स्वरूप दोनों भुजाओं में स्थित है।

मृ – प्रजापति का द्योतक है जो कंठ भाग में स्थित है।

तात् – अमित वषट्कार का द्योतक है जो हृदय प्रदेश में स्थित है।

ऊपर वर्णन किये स्थानों पर उपरोक्त देवता, वसु आदित्य आदि अपनी सम्पूर्ण शक्तियों सहित विराजत हैं। जो प्राणी श्रद्धा सहित महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करता है, उसके शरीर के अंग-अंग (जहां के जो देवता या वसु अथवा आदित्य हैं) उनकी रक्षा होती है।

॥ अथ सम्पूर्ण मंत्र ॥

तत्सवितुर्वरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।
परो रजसे सावदोम्। जातवेदसे सुनवाम
सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
सनः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुंदुरित्याग्निः ॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव
बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॥

॥ इति मंत्र ॥

पूजो शिव ओमकार, महाकाल विक्राल,
त्रिनेत्र धारी शक्ति, भरे श्वास श्वास में।
जगपाल सम्पूर्ण, विश्व करे सुरभित
मुक्त हो के बंधनों से, मिले मोक्ष त्रास में।
कर्कटी स्वतः टूटती, पक लता टपकाय
लता रूपी संसार से, बंधन प्रवास में।
छूटे सदा जन्म मृत्यु, बेल रूपी संसार से
सुधारस पान करें, लीन देह न्यास में।

(घनाक्षरी छंद में भावानुवाद)

शिव पंचाक्षर मंत्र

महादेव शिव के पंचाक्षर स्तोत्र नमः शिवाय में न वर्ण भूमि एवं ब्रह्मा को म वर्ण जल को एवं विष्णु को शि वर्ण अग्नि एवं रूद्र को व वर्ण वायु एवं महेश्वर को य वर्ण गगन सदाशिव एवं जीव का द्योतक है, अर्थात् पांच वर्ण सकल जग एवं जीव के निर्माण के कारक हैं।

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनायस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मे 'न' काराय नमः शिवायः ॥

हे नाथ महेश्वर! देह भस्म लेपित अलंकृत, गले सर्प माल्यरूप डेरा
हे त्रिलोचन! नयन तीन नित्य अनादि अनंत, करें आपका दूर अन्धेरा
हे दिगंबर! आप धरते अम्बर मान वस्त्र शुद्ध विशुद्ध हो जग सबेरा
हे शिवशंकर! नमन 'न' वर्ण आपका पवित्र,
यह स्वरूप हर जग-भव-फेरा।

मंदाकिनी सलिल चंदन चर्चिताय नंदीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मंदारपुष्प बहुपुष्प सुपूजितायतस्मे 'म' काराय नमः शिवायः ॥

हे महादेव! गंग धाररहे शोभित भाल चमके ज्यूं दिनकर प्रकाश हो
हे नन्दीश्वर! चन्दन सुरभित तन है विशाल प्रमथ नाथ मम हृदय वास हो
हे महेश्वर! मंदर गिरि पुष्प से तुम पूजित, आपके चरण में निवास हो
हे भोले! नमन 'म' वर्ण स्वरूप तुम्हें अर्पित मेरे जीवन में प्रभास हो।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृंद सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्री नीलकंठाय वृषभद्धजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवायः॥

हे शिवे! मां हिमसुता गौरी मुख अब्ज कांति प्रदान करते हैं सदा आप
हे हिमेश! कर दर्प-यज्ञ विनाश भलीभांति दक्ष-सुता को भी दिया श्राप
हे धर्मेश! धर्म ध्वज धारी हो नीलकंठ, वृषभ आरोह करूँ मैं जाप
हे भूतेश! नमन 'शि' वर्ण स्वरूपा शितिकण्ठ शंकर बार-बार जय अलाप।

वशिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमाय मुनींद्र देवार्चित शेखराय।
चंद्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवायः॥

हे विभवे! गौतम पूजते तुझे न अघाते कुम्बज ले लेकर नित्य नाम
हे चन्द्रशेखर! ऋषि मुनिजन माला घुमाते जप शिवाय शिवाय सुबह शाम
हे त्रिनेत्र! शशि रवि से अनल लोचन आपके प्रज्वलित करते चारों धाम
हे नागेन्द्र! नमन 'व' वर्णाक्षर को साधके मन में करते नित्य सत्काम

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगंबराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवायः॥

हे यज्ञेश! यज्ञ-यक्ष स्वरूपजटा शोभित ओघड़ शिव नमस्कराय नमः
हे पिनाकधारी! अनादि अनंत न मध्य है शम्भो शिव सनातनाय नमः
हे देवेश! दिव्य हो, देवाधिदेव वंदन दिगम्बर भोले शिवाय नमः
हे नागेश्वर! नमन 'य' वर्ण स्वरूप अभिनंदन अंतस मध्य यकाराय नमः।

पंचाक्षरमिद पुण्यं यः पठेत् शिव सन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

हे शंकर! शिव रूप अत्यंत शुभंकर जपो पंचाक्षर मंत्र बारम्बार
हे मृत्युंजय! जपतेरे नाम अक्षरों को होता जगत में बेडा पार
हे उमापति! प्राप्त तेरा पुण्य लोक उसको जो रखता है श्रद्धा अपार
हे महाकाल! पंचाक्षर जपता जो उसको मिलता शिवलोक सुख संसार।

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं श्रीशिवपञ्चाक्षरस्त्रोतं सम्पूर्णम्॥

द्वादश ज्योतिर्लिंग

अखंड प्रणव ज्योत बनी, ले बृहद लिंग रूप
स्थली द्वादश पुण्य हुई, पड़ी ज्योति अनुरूप

(1)

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥

प्रभास पाटन पश्चिम सिन्धु तट पर विराट मंदिर सोमनाथ अविराम है
नल्ल माल पर्वातासिन श्री शैल में महादेव का मल्लिकार्जुन नाम है
प्राचीन नगरी उज्जयनी जहां कालजयी महाकाल का अनोखा धाम है
प्रणव रूप शिवपुरी द्वीप पर ओंकारेश्वर बैठे ममलेश्वर सकाम है।

(2)

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥

रावण ले चला उठा नाथ आपको तब प्रभु आ स्वयम बैद्यनाथ में रखा
कामरूप नरेश सुदिक्षण ने भीमासुर वध करवा बल आपका था परखा
वन्दना कर श्रीराम ने सिन्धु तट सेतु बना निज नाम दिया रामेश्वरम्
दारुका वन स्थापित नागों के सम्राट तुझे नमन मेरा हे नागेश्वरम्।

(3)

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥

काशी वाराणसी शिव त्रिशूल पर बसी विश्वनाथ कहलाये विश्वेश्वर
गौतम ऋषि की वंदना मान बसे नाथ गोदावरी तट बन त्र्यम्बकेश्वर
हिमगिरी की उच्च शिखर पर न जाने कब से बैठे प्रभु बन केदारेश्वर
एलोरा स्थित घुश्मा प्रतिदिन शत मृदा लिंग पूजन कर लाइ घुश्मेश्वर।

(4)

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

प्रात सांध्य करते जो नित हर हर महादेव की वंदना पूजा-अर्चना
और करते नित गुणगान बारह ज्योति लिंग की महत्ता की अभ्यंजना
कट जाते उस नर के समस्त पाप कर्म जो किये सात जन्मों में अन्यथा
सदा स्मृति में जो रखें नाम प्रलयंकर शिव का, शिव करते कल्याण सर्वदा

(5)

एतेशां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वराः॥

मुझ जैसा पातकी अधम भी भव सागर तर जाए अगर शम्भू करें कृपा
दर्शन कर ज्योतिर्लिंग समुच्चय मैं भी पाऊं शरण तुम्हारी नाथ सर्वथा
सत्य कर्म मेरे अक्षय रहें, रहें नाथ मृत्युंजय प्रसन्न मुझ पर सदा
महेश्वर, त्र्यम्बकेश्वर नाथ शिव प्रलयंकर शरण लीजिये मुझे सर्वदा।

रावण रचित
शिवताण्डवस्त्रोतम्

यह स्तोत्र अनंग शेखर छंद में लिखा गया है। मैंने इसे इसी छंद में अनुवाद करने का प्रयास किया है।

श्री गणेशाय नमः

जटाटवीगलज्जल प्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डम ड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार
चण्ड्ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥1॥

जटा अरण्य मध्य बांध गंग के प्रवाह को
गले लगा कराल काल शेष सर्प दाह को
निनाद डम्म डम्म हो रहा प्रचंड वाद्य से
शिवा करे अनंग नृत्यताण्डवा प्रमाद्य से

जटाकटाहसंभ्रम भ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाट पट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥2॥

जटा कटा महा अटा प्रचंड वेग गंग में
तरंग भाल साज के प्रचंड ज्वाल चन्द्र में
विभूषितंग प्रालयाग्नि माथ प्रात धारते
किशोर चन्द्र धार ले शिवे तुझे नमोस्तुते

धराधरेन्द्रनंदिनी विलासबन्धुबन्धु
रस्फुरद्दिगन्तसन्तति प्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणी निरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिदगम्बरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि॥3॥

हिमाद्रि प्राण करे विलास संग शम्भू अहो
हरे विपत्ति भक्त की करे विमुक्त त्रास वो
धरे सुवस्त्र दिशा दिशा करे कृपा खास वो
शिवे शिवे करे अराधने स्वचित्त भा सुखो

लताभुजङ्गपिङ्गल स्फुरत्फणामणिप्रभा
कदम्बकुङ्कुमद्रव प्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुर स्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं विभर्तुभूतभर्तरि ॥4॥

जटा लता लपेट नाग माणिकप्रदीप्त सा
दिशा कुसुम्भ कांति भाति अब्धि भाल सोहता
मदांध सिन्धुसोहता मतंग वस्त्र खोजता
विभक्त ये नरेंद्र प्राप्तचिज्ञ नन्द है सदा

ललाटचत्वरज्वलद्ध नंजस्फुलिंगया
निपीतपंचसायकं नमन्निलिम्पनायकं ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालिसंपदे सरिज्जटालमस्तुनः ॥5॥

प्रचंड भाल अग्नि से अनंग भस्म हो रहे
त्र्यम्बकेश तो सुरेन्द्र दर्प चूर यूं करे
सुधा प्रभास चन्द्रकान्ति गंग भूषिते शिवे
ददामि नाथ सम्पदा कपाल धारि तू हरे

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेष लेखशेखर
प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥6॥

सहस्त्र अक्ष दक्ष देव देव भाल सोहते
पराग पुष्प पुष्प दिव्य गंध सुविराजते
भुजंग पाद पृष्ठ केश गुच्छ हार भाल पे
चिरायु सम्पदा प्रदानमोह चन्द्र शेखरे

करालभालपट्टिका धगद्धगद्धगज्ज्वलद्ध
नभ्याहुतीकृत प्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनी कुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचनेरतिर्मम॥7॥

प्रचंड ज्वाल भाल भस्म काम को सदा रहो
नगेश नंदिनी कुचाग्र चित्र दक्ष आप हो
प्रवीण नाथआप प्रीत काम क्षार क्षण में
त्रिनेत्र प्रीतआपसेबनी रहे बने रहो

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत् -
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलि पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः॥8॥

अमावसी विपूल अंध सा नवीन मेघ है
वरेण्य कृष्ण कंठ में विराज गंग वेग है
प्ररश्मि चन्द्र गूढ़ दे चर्म शोभितेज है
महेश खान है सुखों कि सम्पदा विशेष है

प्रफुल्लनीलपङ्कज प्रपञ्चकालिमप्रभ
वलम्बिकण्ठकन्दली रुचिप्रबद्धकन्धर।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकछिदं तमंतकच्छिदंभजे॥9॥

सरोजनील पुष्प ज्यूं छटा बिखेरते गले
अधार स्कंध अंध भास धार नील कंठ में
अनंग नाश होय, अंधकारि तू, पुरारि तू
नमामि कामरूप दक्ष यज्ञ ध्वंस कारि तू

अखर्वसर्व मङ्गलाकलाकदंबमञ्जरी
रसप्रवाहमाधुरी विजृंभणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकंतमन्तकान्तकं भजे ॥10॥

न नष्ट हो, शिवे रहो, बनो विकल्प मंजरे
स दक्ष यज्ञ ध्वंस कारि विश्व दुःख तू हरे
गजासुरन्धकारि तू, सकाम दैत्य यूं मरे
यमाध्यिमा भजूं महेश कष्ट नाश संगरे

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रम द्भुजङ्गमश्वस
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्कराल भालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृ दङ्गतुङ्गमङ्गल
ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्डताण्डवःशिवः ॥11॥

सवेग सर्प फूफकार भाल ज्वाल छोड़ते
मृदंग मोहनज्ञ डम्म डम्म नाद बोलते
विषाग्नि भाल दाह डाह उच्चता हुंकारती
प्रचंड तांडवेग दृश्य शंकरा संवारती

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुलजङ्गमौक्तिकस्त्रजोर्गरिष्ठ
रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृज्ञिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहत ॥12 ॥

कड़ी-कठोर शैल सेज कोमलाधिकोमले
मृदात रत्न सीप सर्प हार शत्रु खोजले
न मित्र हो न शत्रु नैन हों सरोज देखले
भजूं समान मान के सदा शिवे सदा शिवे

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमभ्लिंवहन्।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखीभवाम्यहम्॥ 13 ॥

कदा कछार कुञ्ज नर्मदा तटे निवासते
मनोज निर्मला धरे भाल अंजली भक्ति से
विमुक्त लोल नैन सुंदरी त्रिलोक माथ पे
उमा शिवादि मंत्र गान गूंज प्राप्त सम्पदे

निलि पनाथनागरी कदंबमौलिमल्लिका,
निगुम्फ निर्भरक्षन्म धूष्णीका मनोहरः
तनोतु नो मनोमुदं, विनोदिनीं महर्नीशं,
परश्रियं परं पदं तदंगजत्विषां चयः ॥ 14 ॥

सुरीय केश पुष्प माल दे रही सुगंध है
मनोहरी पराग शम्भू अंग माकरंद है
पुकारते रहे सजे हुए शिवा सुखंत हैं
करे प्रसन्न शंकरा सदा सुखी अनंत हैं

प्रचंडवाडवानल प्रभाशुभप्रचारिणी,
महाष्टसिद्धिकामिनी जनावहूतजल्पना।
विमुक्तवामलोचनो विवाहकालिकध्वनिः
शिवेतिमन्त्रभूषणों जगज्जयाम जायतां॥15 ॥

प्रचंड जन्गलाग्नि सा अधर्म भस्म वो करे
स्वरूपिणी विशक्ति अष्ट सिद्धि मंगला करे
महा शिवे विवाह मंत्र चंचला गुंजारता
व्यथा प्रमज़ श्रेष्ठ पाठ ध्वनि जो पुकारता

इदम् हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरोविशुद्धिमेतिसंततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्यचिंतनम्॥16॥

प्रधान स्तोत्र उत्तमोत्तमा प्रदिष्टि ला रहा
कृपा लगाय नित्य मुक्त कंठ से सुना रहा
रखें अखंड भक्ति, ध्यान से हिया लगा रहा
न अन्य मार्ग जो शिवा अभिष्टि देह पा रहा

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः
शंभुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शंभुः॥ 17॥

करें प्रदोष काल में सदा महेश अर्चना
शिवर्चना करें सदैव आपस्वस्ति वंदना
रमा मिले सम्पदा समृद्धि प्राप्त हो उसे
कृपा करें महेश, इंदु भी जपे शिवे शिवे

॥ इतिश्री रावण विरचितं शिवतांडवस्त्रोतं सम्पूर्णम्॥

शिव महिम्न स्त्रोत

परिचय :

शिव के आराधक के लिए शिव आराधना हेतु शिव महिम्न स्त्रोत प्रमुख स्तुति वंदन है एवं यह सर्वश्रेष्ठ अर्चन स्तुति मानी जाती है, जो पौराणिक कथा स्त्रोत के लिए परिचलित है वह निम्नानुसार है।

चित्ररथ नामक एक राजा हुए, वे भगवान् शिव के बहुत बड़े भक्त थे। उन्होंने देवाधिदेव शंकर की आराधना हेतु एक खूबसूरत राजकीय बाग का निर्माण कराया और इसे अनुपम सुन्दर पुष्पों से सजाया, इन सुमनों को प्रति दिन शिव अर्चना में प्रयोग किया जाता।

पुष्पदंत नामक एक गन्धर्व जो इंद्र की सभा में प्रमुख गन्धर्व था एवं किन्नरों आदि के साथ राजा इंद्र के लिए गायन का कार्य करता था, वह फूलों का बहुत प्रेमी था एवं सुन्दर पुष्पों को जहां भी देखता ले लेता। वह भी महादेव शिव का अनन्य भक्त था। चित्र रथ के बाग के पुष्पों को देख वह संयम न रख सका एवं मुग्ध हो वह फूलों को चुराने लगा, फलस्वरूप राजा चित्ररथ शिव जी को पुष्प अर्पित न कर सका एवं उसकी पूजा अधूरी रहने लगी। उसने चोर पकड़ने के कई उपाय किये पर गन्धर्व पुष्पदंत को अदृश्य होने की शक्ति थी, उससे वह अदृश्य हो जाता।

अंतत: विचारपूर्वक चित्ररथ ने शिव निर्मालया का निर्माण करवा कर पूरे उद्यान में बिखरा दिया। यह निर्मालया बिल्व पत्र एवं खूबसूरत फूलों से निर्मित था एवं अति पवित्र एवं पावन भी था।

पुष्पदंत इन बातों से अनभिज्ञ पवित्र निर्मालया पर अपने पग रख दिया एवं ऐसा करते ही वह भगवान् शिव के कोप का भागी हो गया। उसकी अदृश्य होने की शक्ति जाती रही। तब वह शिव को प्रसन्न करने हेतु एक

स्तुति की रचना की जिसमें उसने शिव की महिमा का गुणगान किया।

यह विशेष स्तुति ही शिव महिम्न स्त्रोत के नाम से जानी गयी जिसे स्वर में गा कर पुष्पदंत ने शिव जी को प्रसन्न किया एवं अपनी खोई हुई शक्ति को वापस पा लिया।

इस कथानक के पीछे सत्यता यह भी है कि श्लोक 38 में रचियेता का नाम भी दिया गया है, इस स्तोत्र को सुर में गाने से कामना पूर्ति में बहुत लाभ मिलता है, यह अगले कुछ श्लोकों में स्पष्ट लिखा है।

श्लोक-34 : जो कोई भी शुद्ध ह्रदय एवं भक्ति भाव से इन श्लोकों को गाता है उसे कीर्ति, धन, आयु, पुत्र की प्राप्ति होती है एवं वह इस मृत्यु लोक को छोड़ कर शिवलोक को प्राप्त करता है।

श्लोक-36 में कहा गया है कि इस शिव महिम्न को जो भी सुन्दर सुर से गाता है उसे दीक्षा, दान, तप, तीर्थ, ज्ञान यज्ञ से भी अधिक लाभ प्राप्त होता है।

शिव महिम्न में 43 श्लोक हैं जो संस्कृत में लिखे हुए हैं। इसका पद्यानुवाद छंदबद्ध करने का प्रयास है।

शिव महिम्न स्तोत्र

श्लोक-1

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्गसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीना मपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामधि गृणन्
ममाप्येषः स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥ 1॥

देख हृदय भाव हमारे, स्वीकार करें स्तुति कृपया, हे प्रभु! हे भुवनेश्वर
मैं बालक नादान, ज्या जानू महिमा, जोजान न सके योगी ज्ञानेश्वर।
पूर्ण महिमा ज्ञान बिना, स्तुति होती नहीं, तो व्यर्थ ब्रह्मा की स्तुति अर्चना
ऐसा मानूं मैं, सब लायक हैं, करे निज मति अनुसार आपकी वन्दना॥

श्लोक-2

अतीतः पंथानं तव च महिमा वाड्मनसयो
रतद्व्यावृत्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्त्रोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ 2 ॥

कैसे गाऊं महिमा, वाणी है मेरी असमर्थ हो मन वाणी सेपरे
असंभव है जानना पूर्ण महिमा स्वरूप, अतः वेद भी नेति नेति करे।
प्रगटते जब साकार रूप में भक्त गन गुणगान करते नही हैं थकते
परिणाम आपसे आपके भक्त इसलिए ही प्यार पूज्यभाव हैं रखते॥

श्लोक-3

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत
स्तव ब्रह्मन्किं वा गपि सुरगुरोर्विस्मयपद।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता॥ 3 ॥

हे त्रिपुरानाशक! अमृतमयी वेदों को रच आपने किया जग कल्याण
देव गुरु करें वंदना तो क्या आश्चर्य, करूं निज बुद्धि से मैं गुणगान।
आश्चर्य विहीन हो आप, मेरा प्रयास यह गुणानुवाद का, करें स्वीकार
करें स्वामी लाभान्वित मुझ अधीर की वाणी को, कर पवित्र परिष्कार॥

श्लोक-4

तवैश्वर्यं यत्तद्   जगदुदयरक्षाप्रलयकृत
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहंतुं व्योक्रोशींविदधत इहै के जडधियः ॥4॥

यह जग विदित सृजन, विसर्जन, पालन होता है सृष्टि का देवेश आपसे
ब्रह्मा विष्णु महेश स्वरूप आपके, सत्व, रज, तम त्रिगुण आदेश आपसे।
वेद विदित सत्य यह, जानकार भी बने अनजान कह असत्य इसे अज्ञानी
सत्यता मिटती नहीं इससे भले संतुष्ट हों अज्ञानवश ये अभिमानी॥

श्लोक-5

किमिहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं।
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च॥
अतकर्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो   हतधियः।
कुतर्कोडयंकांश्चि न्मुखरयति मोहाय जगतः॥ 5॥

वितर्क करते प्रायः अज्ञानी किस विधि, किनसे, कैसे हुई सृष्टि रचना
कौन है कर्ता किस सामग्री से बनी सृष्टि सब सोच झूठी व्यर्थना।
सत्य मात्र आप प्रभु सब प्रश्न आप प्रभु और उत्तर भी सब आप भगवान्
दिव्य शक्ति आप हो, आप में समाहित मैं असक्त नहीं कर सकता बखान॥

श्लोक-6

अजन्मानो लोकाः किमवयववंतोऽपि जगता।
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादत्य भवति॥
अनीशो वा कुर्याद भुवनजनने कः परिकरो।
यतो मंदास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे॥ 6॥

भू, भुव, स्व, मह, जन, तप, सत्यं ये सप्त लोक जाने गए निर्मित आपसे
ज़्या संभव है निर्माण रचना जग का, इनका जो कृपा न बरसे आपसे।
आप बिन कौन है प्रभु जो रच सके ये जगत ये सृष्टि दीखता नहीं मुझे
अस्तित्व आपका सर्वव्यापी जड़ अज्ञानी जन ही झुठला सके तुझे॥

श्लोक-7

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पश्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्या दजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्य स्त्वमसि पयसामर्णव इव॥ 7॥

सुंख्य मार्ग, वैष्णव मार्ग, पशुपति मार्ग, वेद मार्ग यूं हैं अनेकोंनेक मार्ग
पाने को आपको भक्त चयन करते श्रद्धा रूचि वश कोई एक मार्ग।
ज्यूं नदियां बहती अलग-अलग फिर भी अंततः मिलती जाकर सागर माय
किसी विधि भी अर्चन करो, अनुसरण कोई मार्ग, मिलेंगे प्रभु आप ही आय॥

श्लोक-8

महोक्षः खड्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीय त्तव वरद तंत्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भव द्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥ 8॥

देवगण सब पा रहे सर्व भोग सुख, मात्र आपकी एक कृपा दृष्टि से
आप हो स्वात्मन सुखाय चाह आपको नहीं किसी भोग पदार्थ की सृष्टि से।
परशु, व्याघ्र चर्म, वृषभ, देह लेपन भष्म, खप्पर ही प्रिय आपको संज्ञान में
यह सिद्ध हुआ जो रहे सुखधाम में नहीं चाह उसे भोग समाधान में॥

श्लोक-9

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वद्ध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मि न्पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवंजिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥ 9॥

हे नाथ कोई कहे यह जग सत्य कोई कहे यह जग असत्य अनित्य है
भक्त आपके मानते सदा सत्य आपको, अन्यथा न कोई औचित्य है।
आपके भक्त पा भक्ति आपकी रहते अनुरागी आनंद में सर्वदा
मैं सहमत आप ही सत्य हो अन्यथा कहे जो मुझे परवाह नहीं कदा॥

श्लोक-10

तवैश्वर्यं यत्ना द्यदुपरि विरिंचिर्हरिरधः
परिच्छेतुं याता वनलमनलस्कंधवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धा भरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ता यां तव किमनुवृत्तिने फलति॥ 10॥

अग्नि स्तंभ बने जब हुआ विवाद ब्रह्मा और विष्णु मध्य की कौन महान
नाप न सके आपके छोर को, कर स्वीकार हार, किया आपका स्तुति गान।
श्रद्धा भक्ति गान से हो प्रसन्न किया प्रकट प्रभु आपने निज मूल स्वरूप
सत्य हृदय से करे जो भक्त स्तुति, दर्शन दे आप अवश्य उसे उस अनुरूप॥

श्लोक-11

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहू नभृन रणकंडुपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणी रचितचरणांभोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥ 11॥

काट काट शीश नौ अर्पित किये दशानन ने आपके अर्चन पूजन में
दशम शीश जब लगे काटने अवतरित हो प्रभु दिया वर आपने वंदन में।
त्रिलोकी विजय पताका फहराई रावण ने पा अतुलित बल उस वर से
पाई विजय कर दृढ़ निश्चय पाया सब परिणाम अटूट भक्ति प्रभुवर से॥

श्लोक-12

अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्यापातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा प्रत्वय्या सीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥12॥

कर भक्ति रावण बना अतुलित बलशाली चाहा ले चलूँ कैलाश को लंका
बचालूं श्रम नित्य आने का, फैला भुजा जब उठाने लगा बजा डंका।
भयभीत माता का मिटाने भय गिराया उसे पाताल हिला चरण अंगुष्ठ
अनाधिकृत बल सम्पदा खोती है सदा विवेक अगर न हो मनुज संतुष्ट॥

श्लोक-13

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिंन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥13॥

सामान्य असुर बाण बन बैठा इंद्र से अधिक ऐश्वर्यवान त्रिभुवन स्वामी
आश्चर्य नहीं यह तथ्य सत्य की परम भक्त पाते सब कुछ अन्तर्यामी।
बाणासुर था आदर्श भक्त तुम्हारा चरणों में थी उसको श्रद्धा भारी
समृद्धि और उन्नति निश्चय ही पाते जो रखते श्रद्धा चरणों में तुम्हारी॥

श्लोक-14

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकित देवासुरकृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयविषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाध्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः ॥14॥

हुआ सागर मंथन पाने को रत्न अनेक तब हलाहल भी प्रयुक्त हुआ
इस कालकूट विष का किया पान आपने तब समस्त विश्व भय मुक्त हुआ।
कंठ आपके विष तेज से हुए नी कहलाये प्रभु तब नीलकंठ आप
व्यक्ति जो हरता कष्ट औरों के पूजा पात्र बनता मिटते सब संताप॥

श्लोक-15

असिद्धार्था नैव कवचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसरुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥15॥

पुत्रेक्षा से भेजा कामदेव जब देवगण थे तारकासुर से आक्रान्त
समाधिष्ठ प्रभु आपकी समाधि भंग करने नृत्य किया काम आप्लवांत।
कामदेव के शर सबको घायल करते पर किया कामदेव का भष्मांत
सत्य है संयमी का करे जो जन अपमान उसका होता यूं ही प्राणांत॥

श्लोक-16

महो पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुज परिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥16॥

जग रक्षा हेतु किया आपने तांडव, समस्त सृष्टि भयाक्रांत कांप उठी
नृत्य पद प्रहार से महि यूं सहे डर से मानो अंत समीप भांप उठी।
जटाएं बिखरी तो स्वर्ग हुआ विपदाग्रस्त, भुजबल से वैकुण्ठ हिल उठा
महादेव अतिशय बल आपका कष्टप्रद है सब जन को सबका दिल उठा॥

श्लोक-17

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥17॥

मन्दाकिनी उतरती धरा पर हो जगमग तारों से प्रभाषित नभ पटल
आकर्षक प्रवाह गंगा का सिमट शीश आपके बिंदु सम छाये अटल
वृहत द्वीप निर्मित होते जटा से निकल वसुधा मध्य बहती जब कलकल
सिद्ध हुआ समा सके गंग वह देह आपकी है महिम एवं दिव्य चपल॥

श्लोक-18

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाडगे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोडयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥18॥

तारकासुर रचित तीन नगरी करने विध्वंस प्रभु किया आपने प्रस्थान
पृथ्वी को बना रथ, ब्रह्मा बने रथी, सूर्य चन्द्र रथ के थे चक्र प्रधान।
मेरु पर्वत धनुवा बना, प्रयुक्त हो विष्णु शर से किया युद्ध का संधान
सक्षम प्रभु आप निज में फिर शक्तियां मांग आपने क्यूं लीला की महान॥

श्लोक-19

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयो
यदिकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भकत्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥19॥

प्रभु आपका सहस्त्र कमल से नित अर्चन करते गोविन्द हरि नियमानुसार
श्री विष्णु की ली आपने परीक्षा कर गायब एक पद्म ओ पालन हार।
कम पा पद्म एक श्री हरि ने नयन निज का चरणों में आपके दिया डार
प्रसन्न हो चक्र सुदर्शन दिया, रखते तीन लोकों की रक्षा का भार॥

श्लोक-20

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सत्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दटपरिकरः कर्मसु जनः ॥ 20 ॥

हे नाथ देते यथायोग्य फल यज्ञ कर्ता को जब हो जाता यज्ञ समाप्त
कोई भी कर्म नही फलदायक जब श्रद्धा उपासना आपकी न हो प्राप्त।
कारण कोई अन्य नहीं हर जन करते पूजन आपकी हो नतमस्तक
वेदों में रख श्रद्धा फलदाता करते शुभारम्भ कार्य पूजें ब्रह्म तक॥

श्लोक-21

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ 21 ॥

देते सर्वदा उचित फल यज्ञ कर्ता को क्यूं न दक्ष प्रजापति को फल दिया
जिस यज्ञ में सब देवता ऋषि यज्ञ कर्ता बन आ क्यूं नष्ट कर दिया।
जहां सम्मान न हो आपका पूजन अर्चना न हो आपकी फल कैसे मिले
सत्य है आपकी भक्ति बिन है यज्ञ अपूर्ण, लाभ यज्ञ का कैसे मिले॥

श्लोक-22

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतंममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥ 22॥

जब निज तनया के मोह वश लिया था रूप हिरण का प्रजापिता ब्रह्मा ने
पुत्री ने रूप धारण किया था मृगनी का और मोह था किया ब्रह्मा ने।
शिकारी रूप धर संग ले धनुष बाण आपने किया ब्रह्मा को निष्काषित
हुए नभ मंडल में अदृश्य ब्रह्मा जी आज पर्यन्त डर से है वे वासित॥

श्लोक-23

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥ 23॥

कामदेव ने आ जब बाधा डाली आपके तप में कर आसक्ति उमा से
मोह उत्पन्न न कर सका काम भी तब किया भष्म तृणवत निज महिमा से।
उमा यदि यह समझे की हैं मुग्ध उन पर क्यूंकि अर्ध अंग तो है उनका
भ्रम है यह निश्चित, सत्य तो है हर नारी है भ्रमित रूप देख कर निजका॥

श्लोक-24

स्मशानेष्वाक्रीड़ा स्महर पिशाचाः सहचरा
श्चिताभस्मालेपः स्तगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथाऽपि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि॥ 24॥

हे नाथ शमी भूमि वास तेरा, भूत-प्रेत तेरे मित्र, लेपते भष्म हो
गले माला कंकाल खोपड़ियों की है सुहाती तुम ही दिव्य ब्रह्म हो।
बाह्य रूप से यह वेश कुछ भी मंगलकारी एवं शुभ नहीं होता प्रतीत
पर सत्य तो यही है भगवन जो करे स्मरण आपका होता मंगल उचित॥

श्लोक-25

मनः प्रत्यविचत्ते सविधमवधायाज्ञमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदशः।
यदालोवयाह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दद्यत्यंतस्तत्त्वं क्रिमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥ 25॥

हे महादेव! पाने को आपको करते योगी जन नित अनेक विधि प्रयास
दूर नगरी से वन वन ढूंढ़ एकांत शास्त्रानुसार करते योग अभ्यास।
कभी प्राण वायु कभी अदम्य साधना हर्षित होते जब वे होते सफल
लक्ष्य तो प्रभु एक ही हैं किस विधि भी करो साधना पाना आपका संबल॥

श्लोक-26

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयिपरिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥ 26॥

हे महादेव! आप में पञ्च भूत गगन जल पवन अग्नि पृथ्वी सब समाया
आप ही भानु हो, आप ही हो शशि आप के सृजन में अवनी अम्बर छाया।
इतना जो सोचूं मैं तो यह भी सोच लगे मुझे संकुचित सीमित और तुच्छ
आप की महिमा अपरम्पार ज़्या नहीं जो आप नहीं हो, आप ही सब कुछ॥

श्लोक-27

त्रयीं तिस्त्रो वृज़ीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा
नकाराद्यैर्वर्णै स्त्रिभिरभिदधज़्तीर्ण विकृतिः।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥ 27॥

बनता ओम शब्द अ उ म तीन शब्दों से जो हैं पावन द्योतक त्रिभुवन के
तीन लोक तीन देव तीन अवस्था सब तो समाहित इस पावन वंदन में।
स्वप्न जागृत सुषुप्ति, ब्रह्मा-विष्णु-महेश एवं तीनों लोकों का आह्लाद
अभिव्यक्त करे आपके तुरीय पद को जब होता पूर्ण ओमकार का नाद॥

श्लोक-28

भवः शर्वो रूद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां
स्तथां भीमशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रवितरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते॥ 28॥

हे नाथ! चर्चित है वेदों में आठ नाम महान जो जग का करे कल्याण
इन को जपो ये भव शर्व रूद्र पशुपति उग्र महादेव भीम एवं ईशान।
प्रत्येक नाम अनुपम प्रत्येक देव के सुनने योग्य प्रिय प्राणों के धाम
करता वंदन नमन श्रद्धा एवं भावपूर्वक, आठों नामों को है प्रणाम॥

श्लोक-29

नमो नेदिष्ठाय प्रियदवदविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमोवर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठा च नमः
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिशर्वाय च नमः॥ 29॥

नमन प्रभु एकांत प्रिय जो दूर होते हुए भी रहते सबके निकट हैं
नमन प्रभु कामदेव भष्म करने वाले सूक्ष्म होते हुए भी विकट हैं।
नमन प्रभु त्रिनेत्र धारी जो वृद्ध भी हैं पर लगते हैं युवा सबसे अधिक
नमन प्रभु महादेव होते सर्वत्र आप फिर भी सब से परे हो सटीक॥

श्लोक-30

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥ 30॥

हे त्रिगुनातित शिव स्वरूप तुझे नमस्कार! तीनों गुणों से परे आप हो
धर रजोगुण सर्जन किया जग का नमन ब्रह्मा स्वरूप हरते संताप हो।
धर तमोगुण को करते जग संहार रूद्र स्वरूप को करता नमस्कार हूं
सत्व गुण धर सुख देते विष्णु स्वरूप को करता प्रणाम बारम्बार हूं॥

श्लोक-31

कृशपरिणाति चेतः क्लेशवश्यं क्वचेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लंधिनी शश्वद्रद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्य-पुष्पोपहारम्॥ 31॥

हे वर दाता शोक मोह दुःख संताप क्लेश से मन मेरा हुआ है व्यथित
करूं किस विधि तुम्हारी दिव्य अपरम्पार महिमा गान, है भ्रमित मन चिंतित।
कीजिये स्वीकार स्तुति हार लिए हृदय भाव करता हूं चरणों में अर्पित
यह हृदयोद्गार मैं बिन किये अभिव्यक्त नहीं रह सकता है भक्ति समर्पित॥

श्लोक-32

असितगिरिसमंस्यात् कज्जलं सिंधुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखिनी पत्रमुर्वि।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणाना मीश पारं न याति॥ 32॥

जलधि जल बने मसि पात्र और उसमे मिले कज्जल पर्वत रंग स्याही का
द्रुम शाखाएं कल्पवृक्ष की बन जाए लेखनी कागद हो जाय महि का।
मां शारदा स्वयम् बैठे लिखने गुण जब आपके काल पर्यन्त दिन रात
नहीं कर सकती सरस्वती भी पूर्णतः वर्णित प्रभु आपके गुणों की बात॥

श्लोक-33

असुरसुरमुनीन्द्रैर र्चितस्येन्दुमौले
ग्र्थितगुण महिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलधुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥ 33॥

हे नाथ! आप तो सब ऋषि-मुनियों के देवों के असुरों के हो पूजनीय
हे नाथ। आप चंद्रमौली कहलाये धारण कर शीश पर शशि कमलनीय।
हे नाथ। आप सब गुणों से हो परे आपकी दिव्य महिमा है अपरम्पार
प्रभावी होकर यह गन्धर्व पुष्पदंत करता स्तुति गान है बारम्बार॥

श्लोक-34

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च॥ 34॥

करता नित्य पाठ है भक्ति भाव और हृदय में जो मनुज पवित्रता लिए
स्वेच्छा से प्राप्त हो धरा के सब सुख धन आयुष्य कीर्ति सम्पन्नता लिए।
उपरांत देहांत के पाता अनुपम शिवतुल्य शांति गति पाकर शिवलोक में
पठन से शिव महिम्न स्तोत्र पाता लौकिक परलौकिक कामना इस लोक में॥

श्लोक-35

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥ 35॥

न कोई देव शिव तुल्य कृपालु न कोई स्तुति
शिव महिम्न स्त्रोत सी अतुलनीय।
महेश सम महिमावान कौन भला मंत्र न ही गुरु
कोई शिव सम पूजनीय॥

श्लोक-36

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नस्तवपाठस्य कल नार्हन्ति षोडशीम्॥ 36॥

दीक्षा दान यज्ञ तप तीर्थ से अधिक फल होता शिव महिम्न स्त्रोत पाठ में।
ज्ञान पाया जो शास्त्रों के पठन से उस से अधिक ज्ञान इस महा पाठ में॥

श्लोक-37

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देव देवस्य दासः।
स खलु निज महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः॥ 37॥

था गन्धर्व राज यह पुष्पदंत शशि शीश धारण करने वाले का भक्त
किया जब उसने शिव को कुपित गन्धर्व विद्या से किया था प्रभु ने असक्त
च्युत भक्त पुष्पदंत क्षुब्ध अति हुआ करने को पुनः प्रसन्न महादेव को।
रचना की शिव महिम्न स्तोत्र की तब प्रसन्न हुए नाथ सुन स्त्रोत सदैव को॥

श्लोक-38

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्रांजलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥ 38॥

कर प्रांजलि दोनों कर से जो कोई भक्तिभाव से पढ़ शिव महिम्न वंदन
प्राप्त उसे हो स्वर्ग और मुक्ति दायक फल दायक किन्नर नायक शिव सदन।
देव ऋषि मुनि पूज्य सब के अराध्य प्रिय शम्भू शंकर महादेव प्राप्त होते
रचित यह महिम्न पुष्पदंत द्वारा अमोघ निश्चित फल सदैव प्राप्त होते॥

श्लोक-39

आसमाप्तमिदं स्त्रोतं पुण्यं गंधर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारिशिवमीश्वरवर्णनम्॥ 39॥

पुष्पदंत गन्धर्व द्वारा रचित यह शिव महिम्न स्त्रोत हुआ समाप्त है अब।
शिव गुणानुवाद, मनमोहक, अनुपम, स्त्रोत होता जिससे पुण्य प्राप्त है अब॥

श्लोक-40

इत्येषा वाडमयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥ 40॥

प्रभु श्री शंकर के चरण कमल में अर्पित है यह मेरी वांगमयी अर्चना।
कृपया स्वीकारें इस तुच्छ सेवा को और रखें प्रसन्नता की संरचना॥

श्लोक-41

तव तत्त्वं न जानामि कीद्शोऽसि महेश्वर।
याद्सोऽसि महादेव ताद्शाय॥ 41॥

यथा रूप यथा स्वरूप में नमन नाथ शिव आपको नमन हे प्रभु महेश्वर।
जानता नहीं सत्य स्वरूप आपका अतः स्वीकारें अर्चन हे देवेश्वर॥

श्लोक-42

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते॥ 42॥

लो एक काल कहूं द्विकाल कहूं या कहूं त्रिकाल आपको
करूं जितना भी पठन शंकर, है महावंदन जान लो।
विमुक्त हो सर्व पाप से मैं, हो पवित्र प्राप्त सुख करूं
समृद्धि प्राप्त कर जा शिव सदन, मस्तक शंकर चरण धरूं॥

श्लोक-43

श्री पुष्पदंत मुखपंकजनिर्गतेन स्तोत्रेंण किल्बिहरेण हरप्रियेण।
कंठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥43॥

पुष्पदंत के मुख पंकज की, उदित रचित स्तुति यह गाये
कल्मष नाशिनी आशुतोष की, यह स्तुति पावनी सुनाये।
पुष्पदंत विरंचित शिव स्तोत्र, निज स्थान रह जो पढ़ाये
शम्भू भोलेनाथ आशुतोष, शिव की भक्ति कृपा पाए॥

॥ इति श्री पुष्पदंतविरचित शिव महिम्नः संपूर्णम् ॥

रूद्राष्टक

(तुलसीदास रचित)

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥ 1॥

नमस्ते नाथ ईशान निर्वाण रूप महान प्रणव प्रदाता
व्याप्त सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में धारण किये निज स्वरूप प्रज्ञाता
प्रभु निष्पक्ष हो, गुण अवगुण हैं सामान्य, हो विकल्प रहित
शिवे अपरिमित गगन सा विस्तार आपका करूं अर्चन नित

निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारं नतोऽहम्॥ 2॥

निराकार ओमकार मूल में हो आप प्रभु कैलाश नाथ
राज नहीं कोई, गिरि रहते शब्दातीत ज्ञानी साक्षात्
अति भयावह रूप, काल के हो महाकाल मंहिष्ठ दयालु
वंदन गुणातीत सकल अपरम्पार शम्भू आप अति कृपालु

तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभिरं मनोभूतकोटिप्रभाश्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥3 ॥

शील शैल हिम सा, गौरांग, सौम्य मुखाकृति, चिंतन लीन सी
सर्व ह्रदय विराजे, वैभव अपार, अभिराम देह, अभिन्न सी
भाल भानु तेज, शीश जटा गंग लहर लहर करे मीन सी
भुजंग कंठ, शीश शशि शोभित दूर हो दशा मेरी दीन सी

चलत्कुण्डलं रूसुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माज़्बरं मुण्डमालं प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि॥ 4 ॥

कर्ण कुंडल चपल भ्रू नेत्र अति सुन्दर नयन विशाल दूति से
कंठ हलाहल लिए, कृपान्वित प्रभु, सुखानन चित्त सम्प्रति से
मृगेश चम्र वसन, गल मुंड माल सोहे दग्धेश परिणति से
जगदीश्वर विश्वनाथ नमन वंदन अभिनन्दन निज भक्ति से

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्र्यः:शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥ 5 ॥

प्रचंड प्रबुद्ध रौद्र अखंड अजन्मा अनादि आप हो नाथ
कोटि आदित्य सम प्रभा लिए त्रिशूल धारी आप हो नाथ
मूल हीन मूल नाशक उमा पति जगधारी आप हो नाथ
वंदन आपको प्रेम विजित संग त्रिपुरारी आप हो नाथ

कलातीतकल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्दसंदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥ 6॥

विनाशक, कालातीत, कल्याणकारी, आशीष देते हो
साथ धर्म का, अधर्म का विनाश आनंद चिज्ञ देते हो
अनुरक्ति आप से सरस शिव सुखकारी आप प्रीत देते हो
मन्मथ नाथ हरो पीड़ा, आराधन सौम्य संगीत देते हो

न यावद् उमानाथपादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥ 7॥

जो न यथावत ऐसे उमापति के चरण कमल में नमन है
जो सुख की खान सर्वलोक पूज्य हैं उन्हें मेरा वंदन है
शांति प्रदाता, सुख दाता, संताप हरते प्रभु का अर्चन है
सर्व स्थल रहते, हृदय वसते ऐसे शिव का अभिनन्दन है

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भूतुभ्यम्।
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो॥ 8॥

नाथ सुनें मैं अति मूढ़ अज्ञानी न जानूं योग जप ध्यान
शीश सदा सर्वदा नत रहे शिव बस इतना है मुझे ज्ञान।
कष्ट दुःख वेदना हर रक्षा कर जरावस्था में सुजान
नमस्तेतु नमस्तेतु शिव शम्भू बारम्बार देव महान॥

॥ इति श्री गोस्वामी तुलसीदास कृतं श्री रूद्राष्टकं सम्पूर्णम्॥

शिव मानस पूजा स्तोत्र

आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा रचित शिव मानस पूजा शिव की एक अनूठी स्तुति है। इस स्तुति में मात्र कल्पना से शिव को सामग्री अर्पित की गई है और पुराण कहते हैं कि साक्षात् शिव ने इस पूजा को स्वीकार किया था।

यह स्तुति भगवान भोलेनाथ की महान उदारता को प्रस्तुत करती है। इस स्तुति को पढ़ते हुए भक्तों द्वारा शिवशंकर को श्रद्धापूर्वक मानसिक रूप से समस्त पंचामृत दिव्य सामग्री समर्पित की जाती है। हम कल्पना में ही उन्हें रत्नजड़ित सिहांसन पर आसीन करते हैं, दिव्य वस्त्र, भोजन तथा आभूषण आदि अर्पण करते हैं।

स्तुति

रत्नैः कल्पितमानसं हिमजलैः स्नानं च दिव्याज्बरं।
नाना रत्न विभूषितम् मृग मदामोदांकितम् चंदनम॥
जाती चम्पक बिल्वपत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा।
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितम् गृह्यताम्॥ 1॥

नाथ पशुपति देव आन बसिए हृदय में पूजन करूं
रत्नादि भूषित सिंहासन किया है निर्मित विराजिये प्रभु।
शीत हिम जल से स्नान कराऊं रत्न जड़ित वस्त्र पहनाऊं
चन्दन केशर तिलक अंग अंग सुरभित पुष्प हार चढाऊं
जूही चंपा बिल्वपत्र की बना पुष्पांजलि करूं समर्पित
कीजिये ग्रहण मानस सुगन्धित धूप दीप कराऊं दर्शित॥

सौवर्णे नवरत्न खंडरचिते पात्र घृतं पायसं।
भक्ष्मं पंचविधं पयोदधि युतं रम्भाफलं पानकम्॥
शाका नाम युतं जलं रुचिकरं कर्पूर खंडौज्ज्वलं।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥ 2॥

रत्न जड़ित नूतन स्वर्णपात्र मात्र मंगाया आपके लिए
पञ्च विधि व्यंजन क्षीर दुग्ध घृत युक्त लाया आपके लिए।
कदलीफल, कपूर से सुवासित पेय बनाया आपके लिए
मानसिक भावों से मृदु जल ताम्बुल सजाया आपके लिये।
कर समर्पित सेवा में मन भावों में आया आपके लिए
शंकर स्वीकार करें भावों को जो लाया आपके लिए॥

छत्रं चामर योर्युगं व्यंजनकं चादर्शकं निर्मलं।
वीणा भेरि मृदंग काहलकला गीतं च नृत्यं तथा॥
साष्टांग प्रणतिः स्तुति-र्बहुविधा ह्येतत्समस्तं ममा।
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥ 3॥

देखो प्रभु छत्र लगा आप पर झल रहा चंवर मयूर पंख
देखो इस दर्पण में रूप सलोना सुन्दर बजाऊं शंख।
बजाऊं वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभी मधुर जिसके स्वर
प्रिय नृत्य कर प्रसन्न करता, गाता स्तुति महादेव हर हर।
संकल्प स्वरुप हूं, साष्टांग प्रणाम करूं, करूं निज समर्पण
प्रभो नाना विधि पूजता आपको कृपया कीजिये ग्रहण॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं।
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः॥
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥ 4॥

नाथ महादेव आप हो मम आत्मा, गिरिजा मति हमारी
प्राण मेरे गण आपके, मंदिर आपका देह गति हमारी।
सम्पूर्ण विषय भोग संरचना ही तो है आपकी पूजा
निंद्रा मेरी निंद्रा नहीं ध्यान समाधि नहीं अन्य दूजा।
चलना मेरा परिक्रमा आपकी, समझो वाणी स्तोत्र हैं
यूं सकल कर्म इस भक्त के आपकी आराधना होत हैं।

कर चरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करणाब्धे श्री महादेव शम्भो॥ 5॥

हे नाथ परमेश्वर! अपराध जो भी किये मैंने आज तक
कर, पाद, वाणी, कर्म, कर्ण, नेत्र अथवा मन से पृथक पृथक।
विहित या अविहित क्षमा प्राथी हूं मैं, क्षमा करो काज सकल
जयति जयति कृपालु करुणाकर रूप भोले हर पल हर पल॥

❍❍❍

निर्वाण षटकम्

(कुकुम्भ छंद में)

निर्वाण षटकम् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित दुर्लभ स्तोत्र है, इसमें उन्होंने भगवान् शिव में अपने को समाहित कर अद्वैतवाद के महत्व को बतलाया है। स्तोत्र का शज़्द संयोजन एवं भाव प्रवाह अद्वितीय है। एक कथा है कि आचार्य का एक शिष्य आचार्य की तरह शिवोअहम का उच्चारण करने लगा बिना इसका लाभ जाने, आचार्य एक लोहार के पास गए और एक गिलास पिघला हुआ लोहा लिया और पी गए फिर शिष्य से कहा तुम भी ऐसा करो, वह ऐसा कैसे कर सकता था, मना कर दिया तब आचार्य ने बतलाया कि उनके लिए पिघला हुआ लोहा या बर्फीला पानी एक समान है, क्यूंकि उन्होंने शिव को पहचान लिया है और शिव के सिवा कुछ नहीं है, अत: जब तक शिष्य उस अवस्था में न पहुंच जाय तब तक शिवोअहम (मैं शिव हूं) बोलने का कोई अर्थ नहीं।

मनो बुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे न च व्योम भूमिर् न तेजो न वायु: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥ स्तोत्र का भावानुवाद कुकुम्भ छंद में करने का प्रयास है —

॥ 1 ॥

मनो बुद्धयहंकारचिज्ञानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे
न च व्योम भूमिर् न तेजो न वायु: चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

बुद्धि न जानो न चित्त जानो, न अहंकार न मन हूं मैं
न कान में न देख जिव्हा में, न नासिका न नयन हूं मैं
मानो न व्योम में न अनल में, न वसुंधरा पवन हूं मैं
अनंत अमरहूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं॥

॥ 2 ॥

न च प्राण संज्ञो न वै पक्वायु: न वा सप्तधातुर् न वा पञ्चकोशः
न वाङ्पाणिपादौ न चोपस्थपायू चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

मुझे न कह प्राण चेतना तू, न दैहिक चल पवन हूं मैं
न सप्त धातु देह रचना को, न पञ्चकोशी तन हूं मैं
जान न हाथ न पैर न वाणी, न इन्द्रिय विसर्जन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं॥

॥ 3 ॥

न मे द्वेष रागौ न मे लोभ मोहौ मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः
न धर्मो न चार्थो न कामो ना मोक्षः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

न बैर न प्रेम मोह किसी से, ना ही लोभी जन हूं मैं
न ही मत्सर मुझमे मिलेगा, न अभिमान सिंचन हूं मैं
मैं हूं परे मोह लिप्सा से, न धर्म जान न धन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं॥

॥ 4 ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखम् न मन्त्रों न तीर्थं न वेदाः न यज्ञाः
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

दुःख सुख मुझमें नपावोगे, न पापी न पावन हूं मैं
न मंत्र न तीर्थ न यज्ञ मानो, न ज्ञान का सर्जन हूं मैं
मुझे न भोगने योग्य जानो, न भोक्ता न भोजन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं॥

॥ 5 ॥

न मृत्युर् न शंका न मे जातिभेदः पिता नैव मे नैव माता न जन्म
न बन्धुर् न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

ना मुझे मृत्यु का लागे, न ही जाति बंधन हूं मैं
न मात न पिता कोई मेरा, न ही कभी जन्मन हूं मैं
न मेरा कोई शिष्य गुरु है, न मित्र बंधू जन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं, मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं ॥

॥ 6 ॥

अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणा
न चासंगतं नैव मुक्तिर् न मेयः चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

मुझे सदा निर्विकल्प मानो, निराकार चिंतन हूं मैं
इन्द्रियों सब से पृथक जानो, न ही विचार मनन हूं मैं
न कल्पनीय हूं न मुक्ति हूं मैं, ना कोई आसंजन हूं मैं
अनंत अमर हूं अनादी हूं मात्र शुद्ध चेतन हूं मैं ॥

OOO

विश्वनाथ अष्टकम्

काशीपति कैलासी अविनासी की वंदना :

जटा मध्य गंग तरंग संग, कलोल गल भुजंग शोभित
उमा विभूषित वामांग नेह, मदन दर्प भंजक पोषित
बाघम्बर द्युपति गिरिजापति, भूपति रौप्याभ रूप प्रभो
काशी वासी अविनासी हरि, विश्वनाथ हर हर शम्भो

शिवं अनेक गुणाधीश रूप, हरि अनेक वाचांगोचर
ब्रह्मा विष्णु सुर सेवित पाद, पंकज विग्रह श्रीमहि धर
मृदंग डमरू नाद उत्कर्ष, मदिर स्वर पंचम नादभो
काशी वासी अविनासी हरि, विश्वनाथ हर हर शम्भो

भुजंग भूषण भूषित भवपति, भुताधिस्य भयंकरि भारि
व्याघ्राम्बर वसन जटिल त्रिनेत्र, शूल पाश वर मुद्रा धारि
जटा धारी दक्ष यज्ञ ध्वंस, फल दाता सब कष्ट हरो
काशी वासी अविनासी हरि, विश्वनाथ हर हर शम्भो

शीतांशु शोभित किरीट बना, त्रिनेत्र भस्म मदन करते
भूलोक देवलोक पाताल, लोक स्वतः पूर्ण प्रकटते
भूताधि गणों के अधिष्ठाता, चमत्कार कर हर शम्भो
काशी वासी अविनासी हरि, विश्वनाथ हर हर शम्भो

आनन्दकन्द अपराजित अतुल, प्रभु अवर्चनीय अवधूत
तेजस चेतस गणेश निर्गुण, निराकार शंकर अच्युत
राग दोष रहित भक्त वत्सल, कृपालु रागी धीर धरो
काशी वासी अविनासी हरि, विश्वनाथ हर हर शम्भो

चिदाकाश ब्रह्मनिरूपित शिव, आ समाधि में चित्त लगा
डमडम डमरू नाद सुना दे, विश्वनाथ अस्तित्व दिखा
सृष्टि से पूर्व सृष्टि के बाद, तेरा तांडव नृत्य प्रभो
काशी वासी अविनासी हरि, विश्वनाथ हर हर शम्भो

— सुरेश चौधरी 'इंदु'

श्रीशिवापराधक्षमापणस्तोत्रम्
अथवा **शिवापराधभञ्जनस्तोत्रम्**

आदौ कर्मप्रसङ्गात्कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां
विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥ 1॥

कलुष कर्मों से बारम्बार गर्भ में आता रहा मैं
गन्द विष्ठा मूत्र साथ जठराग्नि में समाता रहा मैं
कितने दुःख बिताये मैंने वहां कैसे कहूं शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिताः जन्तवो मां तुदन्ति।
नानारोगादिदुःखाद्रुदनपरवशः शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥ 2॥

छोटा बालक दुःख में मल मूत्र से लिथड़ा रोता था
स्तन पान करता रहता बस यही विचार मन होता था
कीट जन्तु काटते थे कभी न तुम्हें याद किया शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ
दष्टो नष्टो विवेकः सुतधनयुवतिस्वादुसौये निषण्णः।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ 3 ॥

पंच विषय रूपी सांपों ने मुझे बुढ़ापे में आ डंसा
हुआ विवेक नष्ट धन सन्तान रमणि के भोग में फंसा
दर्प अहम से भरा तब भी भुला तेरा चिंतन शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

वार्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः
पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढहीनं च दीनम्।
मिथ्यामोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ 4 ॥

बुढ़ापे में इन्द्रिय क्षमता शिथिल हुई मंद पड़ी बुद्धि
अधि दैविकादि तापों पापों रोगों वियोग की अशुद्धि
मिथ्या मोह लालसा में शून्य भुला मैं चिंतन शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयं
पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्खण्डबिल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धधूपैः त्वदर्थं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ 5 ॥

सद्य स्नात ले गंगाजल अभिषेक को कभी नहीं आया
वन जा बिल्वपत्र पूजन हेतु न सरोवर कमल लाया
गन्ध पुष्प अर्पण करना भूल गया मैं तुझे हे शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गं
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ 6 ॥

कभी लिंग पूजन अभिषेक किया नहीं संग पंचामृत
किया नहीं धूप धतूरा दीप रस नैवेद्य से आवृत
चंदन कपूर अनुलेपन तो भूल गया मैं शिव शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवायाकुलाख्यं
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गानुसारे।
ज्ञातो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ 7 ॥

पद-पद घोर प्रायश्चित से घिरा स्मार्तकर्म न कर सका
द्विजकुल विहित ब्रह्मप्राप्ति के श्रोतकर्म न कर सका
धर्म आस्था नहीं निदिध्यासन नहीं होता है शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

ध्यात्वा चित्ते शिवा यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजे यो
हव्यं ते लक्षसङ्ख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।
नो तप्तं गाङ्गातीरे व्रतजपनियमैः रुद्रजाप्यैर्न वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ 8 ॥

ना चित्त में नाम स्मरण कर लक्ष बीजमंत्र जाप किया
ना आहुतियां दी ना व्रत रुद्रजप नियम कर दान दिया
ना वेद विधि संग गंगा तट की तेरी साधना शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्याऽवस्थया त्वां विगतकलिमलं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ 9 ॥

नग्न निःसंग शुद्ध त्रिगुणातीत हो मोह अंधकार को
ध्वंस कर नासिकाग्र में दृष्टि स्थिर कर अहंकार को
कल्याणरूप उन्मनी अवस्था में न स्मरण किया शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कु भके (कुण्डले) सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपेऽपरा ये।
लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ 10 ॥

शतदल पहुंच सूक्ष्म मार्ग प्राप्यप्राण प्रणवनाद में लीन
जहां वेद वाक्य तात्पर्य भूत ज्योति रूप हों तन्लीन
किया न कभी स्मरण सर्वान्तर्यामी कल्याणहेतु शम्भो
कर मेरे अपराध क्षमा शिव शिव महादेव शिव शम्भो

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे युगले।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥11॥

कंदर्प दर्प हारी गंगाधर भासित भाल चन्द्र से
कण्ठ कर्ण सर्प हार शोभित कल्याणरूप मणीन्द्र से
अनल ज्योत नेत्र हस्तिचर्म धर त्रिलोकी के सार प्रभो
चित्त वृतियों को लगा मोक्ष दे दे मुझे शिव शिव शम्भो

किं वाऽनेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन कि।
ज्ञात्वैतत्क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज मन श्रीपार्वतीवल्लभम् ॥12॥

क्या करूंगा प्राप्त हो हाथी घोड़े धन और राज्यादि
सब क्षणभंगुर पदार्थ पुत्र स्त्री घर मित्र पशु देह आदि
रे मन त्याग सब मोह माया इन्हें जान कर तू शम्भो
गुरुवचन कहें जपो पार्वती वल्लभ शिव शंकर शम्भो

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मात्त्वां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना॥ 13॥

आयु बीती जा रही यौवन भी हो रहा प्रतिदिन क्षीण
काल खा रहा नित पूर्ण जग को लौटे नहीं बीते दिन
लक्ष्मी तो चपल है ज्यूं तरंग माला जीवन हुआ अहो
मुझ शरणागत की शीघ्र रक्षा करो शिव शंकर शम्भो

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
शिव शिव करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥ 14॥

कर चरण कृत वाणी समावृत देह कर्म कर्ण नेत्र से
मन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष जो भी हो जिस क्षेत्र से
विहित अविहित जितने अपराध मेरे क्षमा करें शम्भो
करो क्षमा करुणासागर महादेव शिवशिव शिव शम्भो

॥ इति श्रीमद् शङ्कराचार्यकृत शिवापराधक्षमापणस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

शिव जी की बारात

(पार्वती मंगल से प्रेरित-प्रगीत)

ब्रह्मा जी को दी लगन पत्रिका बुला शम्भू शंकर ने
चले देवगण विवाह को भेजा निमंत्रण अभ्यंकर ने
दूत भूत अवधूत सभी नाच रहे समाचार सुनकर
अपने वाहन सुकर स्वान महिष कूकर खर सब सजाकर

नाचत हैं गण तरंग उमंग रंग संग सब बढ़ बढ़ कर
नाना प्रकार अज भेड़िये उलुक नाद करत जमजम कर
देवेश रमेश सङ्ग ब्रह्माजी ले सब देव गण चलें
निरख कर महादेव शम्भू रूप खूब देवन सब हरखे

कर सम्मान देव सब के शंकर बारात ले जा रहे
डमडम धड़धड़ गड़गड़ स्वर दुदम्भी नगाड़े बजा रहे
बज रहे नगाड़े हाथ निशान सङ्ग सुगान गगन भरे
विधुभूषण शिव जी वृषभ बैठ शोभा वर्णन कौन करे

सुर मुनि जयजय कह सुमनदल बरसा रहे शुभ मंगल गा
भूत प्रेत पिशाच सब श्रृंगार कर मद मस्त नाच नचा
गजछाल कपाल ब्याल मुंडमाल विभूषित शिव रूप लसे
देख रूप देवों के देव का विष्णु मन्द मन्द हंसे

हो रहा आनन्द विनोद मार्ग में जबहिं बारात चली
गाजत बाजत पहुंची नगर द्वार बारात सजी सजी
हुई खलबली हिमगिरि राज में ऐसी देखी बारात
पूनम चन्द्र देख सागर उमड़े वैसे लोग हर्षात्

निकट हिमवान गृह जब आये तब श्री हरि यह कहलाये
अपने अपने समाज अनुसार पृथक पृथक सब हो जाये
भूतनाथ संग भूतगण शोभाय मान हो कर सारे
नाना प्रकार के मुख वाहन पर विराज आये द्वारे

कच्छप खोल चढ़ा खाल चर्म की ढोल बना बजा रहे
नर कपाल ले भर जल उसमें पी रहे और पिला रहे
विष्णु भी मुस्का कह रहे वर लायक बारात सजी है
शिव आनंद ले हंस रहे इस भांति हास्य से लसी है

नीलकण्ठ त्रिपुरारि

द्विरद चर्म पट अलंकृत, नीलकण्ठ त्रिपुरारि
गिरी रुप्याभ वर्ण ऋत, अभ्यंकर कामारि

ज्योर्तिमय आनंद घन स्वरूप शिव बाघम्बर हर हर हरे
अणुताधिक सूक्ष्म महान शक्ति सम्पन्न शिव शम्भो भय हरे
प्रदीप्त विद्युत कनक भास चतुर्मुख हर हर शिव शम्भो हरे
तत्पुरुष त्रिलोचन विद्या अभय वर मुद्रा कर शिव शिव हरे

कुठार वेद अंकुश पाश त्रिशूल कपाल डमरू रूद्राक्ष धरे
नीलकांति त्रिनेत्रधारी अघोर शिव शिव शम्भो हर हर हरे
रजत चन्द्र कांति श्वेत स्फटिक वर्ण चन्द्र मौलि शम्भो हरे
नीलकण्ठ महादेव पिनाकपाणि यज्ञ विध्वंसी शिव हरे

कंदर्प दर्प हारी चन्द्रोद्भाषित शेखर जाह्नवी धरे
भुजंग विभूषित कण्ठ कुंतल नेत्र अनल प्रवाह बहे
गज चर्म पट कन्था त्रिलोकी सार शिव शम्भो हर हर हरे
मोक्ष प्रदाता जग विधाता सुख दाता शम्भो हर हर हरे

सांध्य काल है शम्भू यौवन क्षीण हुआ 'इंदु' अब ज़्या करे
प्रत्यन्त काल जग भक्षक बना जलतरंग सा जीवन बहे
धन वैभव चपला सा चपल जीवन चंचल सरिता सा कहे
शरणागत प्रलयंकर रक्षा करो शिव शम्भो हर हर हरे

ooo

आदिशंकराचार्य रचित बहुचर्चित प्रख्यात आनंद लहरी का सरसी छंद में भावानुवाद

चतुर्मुख पंचमुख षठमुख या, हो सहस्त्रमुख शेष
वर्णित न कर पाए तुम्हारे, कभी गुण अति विशेष
क्षमता न एक मुख बालक में, कैसे करूं स्तुति गान
इनकी दशा भवानी ऐसी, क्यों कर करूं अभिमान

रसना ही स्वाद जानती है, घी दूध और दाख
मधु की मधुरता शब्दातीत, प्रयत्न करिए लाख
सौंदर्य तुम्हारा देख सकें, मात्र शम्भू के नेत्र
वेद भी न कर सकते वर्णन, न यह हमारा क्षेत्र

मुख ताम्बुल कज्जल रेख नयन, केसर बिंदी भाल
कटि हेमवर्ण साड़ी पहने, शोभित मुक्ता माल
कटि शाटी ऊपर रत्न जड़ी, मेखला चमकत भास
अनोखी वेशभूषा सज्जित, शैलसुते हर त्रास

पारिजात पुष्पहार स्तन पर, वीणा मोहक नाद
सजे हैं कर्ण कुंडल सुंदर, वक्र अंग अभिमाद
गज गामिनी सी चाल मोहक, नेत्र रक्तिम सरोज
आशुतोष भार्या हे उमा, विजयी तेरा ओज

❍❍❍

आदिशंकर रचित आनंद लहरी

नवीन व्युष सा दीप्तिमान तनु, आभूषित मणि स्वर्ण
विशाल सुंदर मृग सदृश नयन, पति शम्भू सा सुवर्ण
दामिनी सदृश पीत प्रभा है, चारु पीत पट भास
शिंजनी चरण करती मृदु स्वर, भगवति तुझसे आस

हिमसुता पल्लव सम ललित कर, मुक्ता माल प्रसून
कज्जल अलकें घेर भृङ्ग सी, स्थाणु व आश्रय न्यून
रोग हारिणी लता उमा हैं, रूप है चिदानंद
कूच फल भार से झुकी झुकी, वाणी का आनंद

कतिपय गुण ग्राह्य सपर्णा का, सेवन करते लोग
बुद्धि हमारी स्फुरित हो तभी, अपर्णा लगे भोग
बिन पत्ते की लता अपर्णा, पिये पार्वती नाम
आवृत हो स्थाणु पुराना भी, दे मोक्ष फल सकाम

सर्वधर्म की जननी तुम्हीं हो, सब आगम दे जन्म
कुबेर भी करें वन्दन देवि, वैभव का तुम मर्म
कामदेव विजिता मैया तू, आकांक्षा का स्रोत
ब्रह्म स्वरूप शिव पटरानी, सन्त मोक्ष की ज्योत

❍❍❍

आदिशंकर रचित आनंद लहरी

भक्ति प्रचुर नहीं की है क्योंकि, मन मेरा है लोल
आप श्रीमती डालिये दृष्टि, दया की मधुर बोल
चातक प्रेम करे न करे पर, मेघ डाल मुख वारि
बुद्धि किस विधि अनुनीत मेरी, आप से हो संवारि

हे मात साधु चरित्र वाली, कृपा कटाक्ष निहार
ले लिया शरण दीक्षा कर ना, उपेक्षित व्यवहार
कल्प लता हर कदम कामना, पूर्ति न करे तो शेष
असाधारण लता वह ना है, तुम मां लता विशेष

लम्बोदरजा चरणारविन्द, रखूं बहुत विश्वास
लिया न कोई अन्य सहारा, तथापि करूं प्रयास
करो सदय चिज़ मात मुझ पर, न रही कोई आस
बता मां किसकी शरण जाऊं, कौन हरे अब त्रास

पारस स्पर्श पा लोहा बने, मात जिस तरह हेम
नाले का जल बने गंग मिल, पवित्र शुचि जल प्रेम
भिन्न भिन्न पाप से मलिन है, अंतःकरण प्रमेय
आसक्त हुआ प्रेमपूर्वक, विमल हो यही ध्येय

❍❍❍

आदिशंकर रचित आनंद लहरी

अन्य देवों से मिले फल ना, ऐसी कोई रीत
हे ईशानि देती सदा तुम, वांछित आशातीत
ब्रह्मादि आदि पुरुष का कथन, यह नियम सुना सत्य
अतः मन मेरा लगा रहता, तुझमे मेरा नित्य

हे त्रिभुवन महाराज गृहिणी, भिन्न स्फटिकमणि रत्न
हो रहा प्रतिबिम्बित आकार, तुम्हारा बिन प्रयत्न
अट्टालिका शिखर पर बिम्बित, सोहती कला चन्द्र
त्रिदेव आदि घेर खड़े जिसे, भवन तेरा अतन्द्र

गिरिराज नंदिनी कैलास, में तेरा घर द्वार
ब्रह्मा इंद्र स्तुति करें त्रिभुवन, जिनका है परिवार
अष्ट सिद्धि सब नित नमन करे, महेश्वर प्राणनाथ
तुलना तुम्हारे सौभाग्य की,कौन करे है मात

जग जानता कामारि शिव को, वाहन बूढ़ा बैल
विष भोजन दिगम्बर रहते, श्मशान खेलें खेल
भुजंग आभूषण जिस शिव के, वे हैं पति परमेश
महिमा तुम्हारे सौभाग्य की, ऐश्वर्य है अशेष

❍❍❍

आदिशंकर रचित आनंद लहरी

प्रवृत रहे हरपल स्वभावतः, करने को संहार
भस्म लगा देह में बैठता, शमशान बारम्बार
पशुपति शिव ने पिया हलाहल, करने जन कल्याण
अवश्य फल आपके साथ का, बदला मति का भान

शैलनन्दिनी देख आपका, रूप हुई भय ग्रस्त
जलमय शरीर कर धारण तो, जाह्नवी हुई त्रस्त
दीन कमल मुख देख दयावश, शिव ने मस्तक धार
बढ़ाई प्रतिष्ठा गंगा की, हे मात नमस्कार

कमलनयनी वनिताएं रची, ब्रह्मा तुझको देख
विशाल चन्दन रस कस्तूरी, केसर प्रसून रेख
ऐसे अनुलेपन के जल को, और चरण की धूलि
ले भगवती जब सृष्टि की थी, ब्रह्मा जी की तूलि

खिली लताओं से मण्डित ऋतु, होती देवि वसंत
नाना सुरभित कमल सुशोभित, हंस अलंकृत कंत
जहां जल मलयानिल से डोल, सखियों से कर खेल
ऐसे दृश्य की कर कल्पना, रोग हों सब अमेल

❍❍❍

शिव को पुनः नील-कंठ बनाना होगा

पूर्ण करने को तेरी आराधना,
सफल करने को तेरी प्रार्थना,
प्याला विष का पीना होगा,
शिव को पुनः नील-कंठ बनाना होगा,
विचारों में परिवर्तन लाना होगा।

अलख क्रांति की तुम्हें जलानी होगी,
भागीरथ प्रयत्न कर,
चीर हृदय हिमालय का,
मंदाकनी त्याग-प्रेम-उत्थान की बहानी होगी।

क्यूं आज हुआ जा रहा अधीर,
धीर हो तुम, वीर हो तुम,
निष्ठा-वान तुम, ज्ञान वान तुम,
विश्व विजयी भारत की तुम तकदीर।

परिवर्तित स्वप्न नयन में विचर रहे,
परिवर्तन तो निज ख्यालों में लाना होगा,
उधार के सपनों को छोड़
स्वयं के सपनों को सजाना होगा,
शिव को पुनः नील-कंठ बनाना होगा,
विचारों में परिवर्तन लाना होगा।

अद्भुत पौराणिक कथा :
शिव और सती का प्रेम

दक्ष प्रजापति की सभी पुत्रियां गुणवती थीं। फिर भी दक्ष के मन में संतोष नहीं था। वे चाहते थे उनके घर में एक ऐसी पुत्री का जन्म हो, जो सर्व शक्ति-संपन्न हो एवं सर्वविजयिनी हो। अत: दक्ष एक ऐसी ही पुत्री के लिए तप करने लगे।

तप करते-करते अधिक दिन बीत गए तो भगवती आद्या ने प्रकट होकर कहा, 'मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हूं। तुम किस कारण तप कर रहे हो? दक्ष ने तप करने का कारण बताया तो मां बोली - मैं स्वयं पुत्री रूप में तुम्हारे यहां जन्म धारण करूंगी। मेरा नाम होगा सती।

मैं सती के रूप में जन्म लेकर अपनी लीलाओं का विस्तार करूंगी। फलत: भगवती आद्या ने सती रूप में दक्ष के यहां जन्म लिया।

सती दक्ष की सभी पुत्रियों में सबसे अलौकिक थीं।

सती ने बाल्यावस्था में ही कई ऐसे अलौकिक आश्चर्य चकित करने वाले कार्य कर दिखाए थे, जिन्हें देखकर स्वयं दक्ष को भी विस्मयता होती रहती थी। जब सती विवाह योग्य हो गई तो दक्ष को उनके लिए वर की चिंता होने लगी। उन्होंने ब्रह्मा जी से इस विषय में परामर्श किया।

ब्रह्मा जी ने कहा - सती आद्या की अवतार हैं। आद्या आदि शक्ति और शिव आदि पुरुष हैं। अत: सती के विवाह के लिए शिव ही योग्य और उचित वर हैं। दक्ष ने ब्रह्मा जी की बात मानकर सती का विवाह भगवान शिव के साथ कर दिया।

सती कैलाश में जाकर भगवान शिव के साथ रहने लगीं। भगवान शिव दक्ष के दामाद थे, किंतु किसी वजह से दक्ष के हृदय में भगवान शिव के प्रति बैर और विरोध भाव पैदा हो गया।

एक बार देवलोक में ब्रह्मा ने धर्म के निरूपण के लिए एक सभा का आयोजन किया था। सभी बड़े-बड़े देवता सभा में एकत्र हुए। भगवान शिव भी इस सभा में बैठे थे। सभा मण्डल में दक्ष का आगमन हुआ। दक्ष के आगमन पर सभी देवता उठकर खड़े हो गए पर भगवान शिव खड़े नहीं हुए।

उन्होंने दक्ष को प्रणाम भी नहीं किया। फलत: दक्ष ने अपमान का अनुभव किया। केवल यही नहीं, उनके हृदय में भगवान शिव के प्रति ईर्ष्या की आग जल उठी। वे उनसे बदला लेने के लिए समय और अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

एक बार सती और शिव कैलाश पर्वत पर बैठे हुए परस्पर वार्तालाप कर रहे थे। उसी समय आकाश मार्ग से कई विमान कनखल की ओर जाते हुए दिखाई पड़े। सती ने उन विमानों को दिखकर भगवान शिव से पूछा, 'प्रभो, ये सभी विमान किसके हैं और कहां जा रहे हैं?'

भगवान शंकर ने उत्तर दिया - 'आपके पिता ने बड़े यज्ञ का आयोजन किया है। समस्त देवता और देवांगनाएं इन विमानों में बैठकर उसी यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए जा रहे हैं।'

इस पर सती ने दूसरा प्रश्न किया, क्या मेरे पिता ने आपको यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए नहीं बुलाया?

भगवान शंकर ने उत्तर दिया, आपके पिता मुझसे बैर रखते हैं, फिर वे मुझे क्यों बुलाने लगे?

सती मन ही मन सोचने लगीं, फिर बोलीं - यज्ञ के इस अवसर पर अवश्य मेरी सभी बहनें आएंगी। उनसे मिले हुए बहुत दिन हो गए। यदि

आपकी अनुमति हो तो मैं भी अपने पिता के घर जाना चाहती हूं। यज्ञ में सम्मिलित हो लूंगी और बहनों से भी मिलने का सुअवसर मिलेगा।

भगवान शिव ने उत्तर दिया, इस समय वहां जाना उचित नहीं होगा। आपके पिता मुझसे बैर रखते हैं। हो सकता है, वे आपका भी अपमान करें। बिना बुलाए किसी के घर जाना उचित नहीं होता है।

इस पर सती ने प्रश्न किया, ऐसा क्यों ?

भगवान शिव ने उत्तर दिया – विवाहिता लड़की को बिना बुलाए पिता के घर नहीं जाना चाहिए, क्योंकि विवाह हो जाने पर लड़की अपने पति की हो जाती हैं। पिता के घर से उसका संबंध टूट जाता हैं, लेकिन सती पीहर जाने के लिए हठ करती रहीं। अपनी बात बार-बात दोहराती रहीं। उनकी इच्छा देखकर भगवान शिव ने पीहर जाने की अनुमति दे दी। उनके साथ अपना एक गण भी साथ में भेज दिया, उस गण का नाम वीरभद्र था। सती वीरभद्र के साथ अपने पिता के घर गईं।

घर में सती से किसी ने भी प्रेमपूर्वक वार्तालाप नहीं किया। दक्ष ने उन्हें देखकर कहा – तुम क्या यहां मेरा अपमान कराने आई हो ?

अपनी बहनों को तो देखो वे किस प्रकार भांति-भांति के अलंकारों और सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित हैं। तुम्हारे शरीर पर मात्र बाघांबर हैं। तुम्हारा पति श्मशानवासी और भूतों का नायक हैं। वह तुम्हें बाघांबर छोड़कर और पहना ही क्या सकता है।

दक्ष के कथन से सती के हृदय में पश्चाताप का सागर उमड़ पड़ा। वे सोचने लगीं, उन्होंने यहां आकर अच्छा नहीं किया। भगवान ठीक ही कह रहे थे, बिना बुलाए पिता के घर भी नहीं जाना चाहिए। पर अब क्या हो सकता हैं ? अब तो आ ही गई हूं।

पिता के कटु और अपमानजनक शब्द सुनकर भी सती मौन रहीं। वे उस यज्ञमंडल में गईं जहां सभी देवता और ऋषि-मुनि बैठे थे तथा यज्ञकुण्ड

में धू-धू करती जलती हुई अग्नि में आहुतियां डाली जा रही थीं।

सती ने यज्ञमंडप में सभी देवताओं के तो भाग देखे, किंतु भगवान शिव का भाग नहीं देखा। वे भगवान शिव का भाग न देखकर अपने पिता से बोलीं पितृश्रेष्ठ! यज्ञ में तो सबके भाग दिखाई पड़ रहे हैं, किंतु कैलाशपति का भाग नहीं हैं।

आपने उनका भाग क्यों नहीं रखा? दक्ष ने गर्व से उज़र दिया - मैं तुम्हारे पति शिव को देवता नहीं समझता। वह तो भूतों का स्वामी, नग्न रहने वाला और हड्डियों की माला धारण करने वाला है। वह देवताओं की पंक्ति में बैठने योग्य नहीं है। उसे कौन भाग देगा?

सती के नेत्र लाल हो उठे। उनका मुखमंडल प्रलय के सूर्य की भांति तेजोदिप्त हो उठा। उन्होंने पीड़ा से तिलमिलाते हुए कहा - ओह! मैं इन शब्दों को कैसे सुन रहीं हूं, मुझे धिक्कार है।

देवताओं तुम्हें भी धिक्कार है! तुम भी उन कैलाशपति के लिए इन शब्दों को कैसे सुन रहे हो, जो मंगल के प्रतीक हैं और जो क्षण मात्र में संपूर्ण सृष्टि को नष्ट करने की शक्ति रखते हैं। वे मेरे स्वामी हैं। नारी के लिए उसका पति ही स्वर्ग होता हैं।

जो नारी अपने पति के लिए अपमानजनक शब्दों को सुनती हैं, उसे नरक में जाना पड़ता हैं। पृथ्वी सुनो, आकाश सुनो और देवताओं, तुम भी सुनो! मेरे पिता ने मेरे स्वामी का अपमान किया हैं। मैं अब एक क्षण भी जीवित रहना नहीं चाहती। सती अपने कथन को समाप्त करती हुई यज्ञ के कुण्ड में कूद पड़ी। जलती हुई आहुतियों के साथ उनका शरीर भी जलने लगा।

यज्ञमंडप में खलबली पैदा हो गई, हाहाकार मच गया। देवता उठकर खड़े हो गए। वीरभद्र क्रोध से कांप उठे। वे उछल-उछलकर यज्ञ का

विध्वंस करने लगे। यज्ञमंडप में भगदड़ मच गई। देवता और ऋषि-मुनि भाग खड़े हुए।

वीरभद्र ने देखते ही देखते दक्ष का मस्तक काटकर फेंक दिया। समाचार भगवान शिव के कानों में भी पड़ा। वे प्रचंड आंधी की भांति कनखल जा पहुंचे। सती के जले हुए शरीर को देखकर भगवान शिव ने अपने आपको भूल गए।

सती के प्रेम और उनकी भक्ति ने शंकर के मन को व्याकुल कर दिया। उन शंकर के मन को व्याकुल कर दिया, जिन्होंने काम पर भी विजय प्राप्त की थी और जो सारी सृष्टि को नष्ट करने की क्षमता रखते थे। वे सती के प्रेम में खो गए, बेसुध हो गए।

भगवान शिव ने उन्मत की भांति सती के जले हुए शरीर को कंधे पर रख लिया। वे सभी दिशाओं में भ्रमण करने लगे। शिव और सती के इस अलौकिक प्रेम को देखकर पृथ्वी रुक गई, हवा रूक गई, जल का प्रवाह ठहर गया और रुक गईं देवताओं की सांसें।

सृष्टि व्याकुल हो उठी, सृष्टि के प्राणी पुकारने लगे, त्राहिमाम! त्राहिमाम! भयानक संकट उपस्थित देखकर सृष्टि के पालक भगवान विष्णु आगे बढ़े। वे भगवान शिव की बेसुधी में अपने चक्र से सती के एक-एक अंग को काट-काट कर गिराने लगे।

धरती पर 51 स्थानों में सती के अंग कट-कट कर गिरे। जब सती के सारे अंग कट कर गिर गए, तो भगवान शिव पुन: अपने आप में आए। जब वे अपने आप में आए, तो पुन: सृष्टि के सारे कार्य चलने लगे।

धरती पर जिन 51 स्थानों में सती के अंग कट-कट कर गिरे थे, वे ही स्थान आज शक्तिपीठ माने जाते हैं। आज भी उन स्थानों में सती का पूजन होता है, उपासना होती हैं। धन्य था शिव और सती का प्रेम। शिव और सती के प्रेम ने उन्हें अमर और वंदनीय बना दिया।

(स्रोत : अज्ञात)

❍❍❍

भगवान शिव के 35 रहस्य

भगवान शिव अर्थात् पार्वती के पति शंकर जिन्हें महादेव, भोलेनाथ, आदिनाथ आदि कहा जाता है।

1. **आदिनाथ शिव :** सर्वप्रथम शिव ने ही धरती पर जीवन के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया, इसलिए उन्हें 'आदिदेव' भी कहा जाता है। 'आदि' का अर्थ प्रारंभ। आदिनाथ होने के कारण उनका एक नाम 'आदिश' भी है।

2. **शिव के अस्त्र-शस्त्र :** शिव का धनुष पिनाक, चक्र भवरेंदु और सुदर्शन, अस्त्र पाशुपतास्त्र और शस्त्र त्रिशूल है। उक्त सभी का उन्होंने ही निर्माण किया था।

3. **भगवान शिव का नाग :** शिव के गले में जो नाग लिपटा रहता है, उसका नाम वासुकि है। वासुकि के बड़े भाई का नाम शेषनाग है।

4. **शिव की अर्द्धांगिनी :** शिव की पहली पत्नी सती ने ही अगले जन्म में पार्वती के रूप में जन्म लिया और वही उमा, उर्मि, काली कही गई हैं।

5. **शिव के पुत्र :** शिव के प्रमुख 6 पुत्र हैं-गणेश, कार्तिकेय, सुकेश, जलंधर, अयप्पा और भूमा। सभी के जन्म की कथा रोचक है।

6. **शिव के शिष्य :** शिव के 7 शिष्य हैं, जिन्हें प्रारंभिक सप्तऋषि माना गया है। इन ऋषियों ने ही शिव के ज्ञान को संपूर्ण धरती पर प्रचारित किया, जिसके चलते भिन्न-भिन्न धर्म और संस्कृतियों की उत्पत्ति हुई। शिव ने ही गुरु और शिष्य परंपरा की शुरुआत की थी। शिव के शिष्य हैं-बृहस्पति, विशालाक्ष, शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज इसके अलावा 8वें गौरशिरस मुनि भी थे।

7. **शिव के गण :** शिव के गणों में भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय प्रमुख हैं। इसके अलावा, पिशाच, दैत्य और नाग-नागिन, पशुओं को भी शिव का गण माना जाता है।

8. **शिव पंचायत :** भगवान सूर्य, गणपति, देवी, रूद्र और विष्णु - ये शिव पंचायत कहलाते हैं।

9. **शिव के द्वारपाल :** नंदी, स्कंद, रिटी, वृषभ, भृंगी, गणेश, उमा-महेश्वर और महाकाल।

10. **शिव पार्षद :** जिस तरह जय और विजय विष्णु के पार्षद हैं, उसी तरह बाण, रावण, चंड, नंदी, भृंगी आदि शिव के पार्षद हैं।

11. **सभी धर्मों का केंद्र शिव :** शिव की वेशभूषा ऐसी है कि प्रत्येक धर्म के लोग उनमें अपने प्रतीक ढूंढ़ सकते हैं। मुशरिक, यजीदी, साबिईन, सुबी, इब्राहीमी धर्मों में शिव के होने की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। शिव के शिष्यों से एक ऐसी परंपरा की शुरुआत हुई, जो आगे चलकर शैव, सिद्ध, नाथ, दिगंबर और सूफी संप्रदाय में विभक्त हो गई।

12. **बौद्ध साहित्य के मर्मज्ञ अंतरराष्ट्रीय :** ख्यातिप्राप्त विद्वान प्रोफेसर उपासक का मानना है कि शंकर ने ही बुद्ध के रूप में जन्म लिया था। उन्होंने पालि ग्रंथों में वर्णित 27 बुद्धों का उल्लेख करते हुए बताया कि इनमें बुद्ध के 3 नाम अतिप्राचीन हैं-तणंकर, शणंकर और मेघंकर।

13. **देवता और असुर दोनों के प्रिय शिव :** भगवान शिव को देवों के साथ असुर, दानव, राक्षस, पिशाच, गंधर्व, यक्ष आदि सभी पूजते हैं। वे रावण को भी वरदान देते हैं और राम को भी। उन्होंने भस्मासुर, शुक्राचार्य आदि कई असुरों को वरदान दिया था। शिव सभी आदिवासी, वनवासी, जाति, वर्ण, धर्म और समाज के सर्वोच्च देवता हैं।

14. **शिव चिह्न :** वनवासी से लेकर सभी साधारण व्यक्ति जिस चिह्न की पूजा कर सकें, उस पत्थर के ढेले, बटिया को शिव का चिह्न माना जाता है। इसके अलावा रूद्राक्ष और त्रिशूल को भी शिव का चिह्न माना गया है। कुछ लोग डमरू और अर्द्ध चन्द्र को भी शिव का चिह्न मानते हैं, हालांकि ज्यादातर लोग शिवलिंग अर्थात् शिव की ज्योति का पूजन करते हैं।

15. **शिव की गुफा :** शिव ने भस्मासुर से बचने के लिए एक पहाड़ी में अपने त्रिशूल से एक गुफा बनाई और वे फिर उसी गुफा में छिप गए। वह गुफा जम्मू से 150 किलोमीटर दूर त्रिकुटा की पहाड़ियों पर है। दूसरी ओर भगवान शिव ने जहां पार्वती को अमृत ज्ञान दिया था, वह गुफा 'अमरनाथ गुफा' के नाम से प्रसिद्ध है।

16. **शिव के पैरों के निशान :** श्रीपद-श्रीलंका में रतन द्वीप पहाड़ की चोटी पर स्थित श्रीपद नामक मंदिर में शिव के पैरों के निशान हैं। ये पदचिह्न 5 फुट 7 इंच लंबे और 2 फुट 6 इंच चौड़े हैं। इस स्थान को सिवानोलीपदम कहते हैं। कुछ लोग इसे आदम पीक कहते हैं।

रूद्र पद - तमिलनाडु के नागपट्टीनम जिले के थिरुवेंगडू क्षेत्र में श्रीस्वेदारण्येश्वर मंदिर में शिव के पदचिह्न हैं जिसे 'रूद्र पदम' कहा जाता है। इसके अलावा थिरुवन्नामलाई में भी एक स्थान पर शिव के पदचिह्न हैं।

तेजपुर - असम के तेजपुर में ब्रह्मपुत्र नदी के पास स्थित रूद्रपद मंदिर में शिव के दाएं पैर का निशान है।

जागेश्वर - उत्तराखंड के अल्मोड़ा से 36 किलोमीटर दूर जागेश्वर मंदिर की पहाड़ी से लगभग साढ़े 4 किलोमीटर दूर जंगल में भीम के मंदिर के पास शिव के पदचिह्न हैं। पांडवों को दर्शन देने से बचने के लिए उन्होंने अपना एक पैर यहां और दूसरा कैलाश में रखा था।

रांची - झारखंड के रांची रेलवे स्टेशन से 7 किलोमीटर की दूरी पर 'रांची हिल' पर शिवजी के पैरों के निशान हैं। इस स्थान को 'पहाड़ी बाबा मंदिर' कहा जाता है।

17. **शिव के अवतार :** वीरभद्र, पिप्पलाद, नंदी, भैरव, महेश, अश्वत्थामा, शरभावतार, गृहपति, दुर्वासा, हनुमान, वृषभ, यतिनाथ, कृष्णदर्शन, अवधूत, भिक्षुवर्य, सुरेश्वर, किरात, सुनटनर्तक, ब्रह्मचारी, यक्ष, वैश्यानाथ, द्विजेश्वर, हंसरूप, द्विज, नतेश्वर आदि हुए हैं। वेदों में रूद्रों का जिक्र है। रूद्र 11 बताए जाते हैं- कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शंभू, चण्ड तथा भव।

18. **शिव का विरोधाभासिक परिवार :** शिवपुत्र कार्तिकेय का वाहन मयूर है, जबकि शिव के गले में वासुकि नाग है। स्वभाव से मयूर और नाग आपस में दुश्मन हैं। इधर गणपति का वाहन चूहा है, जबकि सांप मूषकभक्षी जीव है। पार्वती का वाहन शेर है, लेकिन शिवजी का वाहन तो नंदी बैल है। इस विरोधाभास या वैचारिक भिन्नता के बावजूद परिवार में एकता है।

19. **तिज़्बत** स्थित कैलाश पर्वत पर उनका निवास है। जहां पर शिव विराजमान हैं, उस पर्वत के ठीक नीचे पाताल लोक है जो भगवान विष्णु का स्थान है। शिव के आसन के ऊपर वायुमंडल के पार क्रमश: स्वर्ग लोक और फिर ब्रह्माजी का स्थान है।

20. **शिव भक्त :** ब्रह्मा, विष्णु और सभी देवी-देवताओं सहित भगवान राम और कृष्ण भी शिव भक्त है। हरिवंश पुराण के अनुसार कैलास पर्वत पर कृष्ण ने शिव को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की थी। भगवान राम ने रामेश्वरम में शिवलिंग स्थापित कर उनकी पूजा-अर्चना की थी।

21. **शिव ध्यान :** शिव की भक्ति हेतु शिव का ध्यान-पूजन किया जाता है। शिवलिंग को बिल्वपत्र चढ़ाकर शिवलिंग के समीप मंत्र जाप या ध्यान करने से मोक्ष का मार्ग पुष्ट होता है।

22. **शिव मंत्र :** दो ही शिव के मंत्र हैं पहला - ॐ नम: शिवाय। दूसरा महामृत्युंजय मंत्र - ॐ ह्रौं जू स:। ॐ भू: भुव: स्व:। ॐ त्र्यम्बक् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धन। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। स्व: भुव: भू: ॐ। स: जू ह्रौं ॐ है।

23. **शिव व्रत और त्योहार :** सोमवार, प्रदोष और श्रावण मास में शिव व्रत रखे जाते हैं। शिवरात्रि और महाशिवरात्रि शिव का प्रमुख पर्व-त्योहार है।

24. **शिव प्रचारक :** भगवान शंकर की परंपरा को उनके शिष्यों बृहस्पति, विशालाक्ष (शिव), शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज, अगस्त्य मुनि, गौरशिरस मुनि, नंदी, कार्तिकेय, भैरवनाथ आदि ने आगे बढ़ाया। इसके अलावा वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, बाण, रावण, जय और विजय ने भी शैवपंथ का प्रचार किया। इस परंपरा में सबसे बड़ा नाम आदिगुरु भगवान दत्तात्रेय का आता है। दज़ात्रेय के बाद आदि शंकराचार्य, मत्स्येन्द्रनाथ और गुरु गोरखनाथ का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

25. **शिव महिमा :** शिव ने कालकूट नामक विष पिया था जो अमृत मंथन के दौरान निकला था। शिव ने भस्मासुर जैसे कई असुरों को वरदान दिया था। शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया था। शिव ने गणेश और राजा दक्ष के सिर को जोड़ दिया था। ब्रह्मा द्वारा छल किए जाने पर शिव ने ब्रह्मा का पांचवां सिर काट दिया था।

26. **शैव परम्परा :** दसनामी, शाक्त, सिद्ध, दिगंबर, नाथ, लिंगायत, तमिल शैव, कालमुख शैव, कश्मीरी शैव, वीरशैव, नाग, लकुलीश, पाशुपत, कापालिक, कालदमन और महेश्वर सभी शैव परंपरा से हैं। चंद्रवंशी, सूर्यवंशी, अग्निवंशी और नागवंशी भी शिव की परंपरा से ही माने जाते हैं। भारत की असुर, रक्ष और आदिवासी जाति के आराध्य देव शिव ही हैं। शैव धर्म भारत के आदिवासियों का धर्म है।

27. **शिव के प्रमुख नाम :** शिव के वैसे तो अनेक नाम हैं, जिनमें 108 नामों का उल्लेख पुराणों में मिलता है। यहां प्रचलित नाम जानें - महेश, नीलकंठ, महादेव, महाकाल, शंकर, पशुपतिनाथ, गंगाधर, नटराज, त्रिनेत्र, भोलेनाथ, आदिदेव, आदिनाथ, त्रियंबक, त्रिलोकेश, जटाशंकर, जगदीश, प्रलयंकर, विश्वनाथ, विश्वेश्वर, हर, शिवशंभू, भूतनाथ और रूद्र।

28. **अमरनाथ के अमृत वचन :** शिव ने अपनी अर्द्धांगिनी पार्वती को मोक्ष हेतु अमरनाथ की गुफा में जो ज्ञान दिया उस ज्ञान की आज अनेकानेक शाखाएं हो चली हैं। वह ज्ञानयोग और तंत्र के मूल सूत्रों में शामिल है। 'विज्ञान भैरव तंत्र' एक ऐसा ग्रंथ है, जिसमें भगवान शिव द्वारा पार्वती को बताए गए 112 ध्यान सूत्रों का संकलन है।

29. **शिव ग्रंथ :** वेद और उपनिषद सहित विज्ञान भैरव तंत्र, शिव पुराण और शिव संहिता में शिव की संपूर्ण शिक्षा और दीक्षा समाई हुई है। तंत्र के अनेक ग्रंथों में उनकी शिक्षा का विस्तार हुआ है।

30. **शिवलिंग :** वायु पुराण के अनुसार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुन: सृष्टिकाल में जिससे प्रकट होती है, उसे लिंग कहते हैं। इस प्रकार विश्व की संपूर्ण ऊर्जा ही लिंग की प्रतीक है। वस्तुत: यह संपूर्ण सृष्टि बिंदु-नाद स्वरूप है। बिंदु शक्ति है और नाद शिव। बिंदु अर्थात् ऊर्जा और नाद अर्थात् ध्वनि। यही दो संपूर्ण ब्रह्माण्ड का आधार है। इसी कारण प्रतीक स्वरूप शिवलिंग की पूजा-अर्चना है।

31. **बारह ज्योतिर्लिंग :** सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, वैद्यनाथ, भीमशंकर, रामेश्वरम, नागेश्वर, विश्वनाथजी, त्र्यम्बकेश्वर, केदारनाथ, घृष्णेश्वर। ज्योतिर्लिंग उत्पत्ति के संबंध में अनेकों मान्यताएं प्रचलित है। ज्योतिर्लिंग यानी 'व्यापक ब्रह्मात्मलिंग' जिसका अर्थ है 'व्यापक प्रकाश'। जो शिवलिंग के बारह खंड हैं। शिवपुराण के अनुसार ब्रह्म, माया, जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी को ज्योतिर्लिंग या ज्योति पिंड कहा गया है।

दूसरी मान्यता अनुसार शिव पुराण के अनुसार प्राचीनकाल में आकाश से ज्योति पिंड पृथ्वी पर गिरे और उनसे थोड़ी देर के लिए प्रकाश फैल गया। इस तरह के अनेकों उल्का पिंड आकाश से धरती पर गिरे थे। भारत में गिरे अनेकों पिंडों में से प्रमुख बारह पिंड को ही ज्योतिर्लिंग में शामिल किया गया।

32. **शिव का दर्शन :** शिव के जीवन और दर्शन को जो लोग यथार्थ दृष्टि से देखते हैं, वे सही बुद्धि वाले और यथार्थ को पकड़ने वाले शिवभक्त हैं, क्योंकि शिव का दर्शन कहता है कि यथार्थ में जियो, वर्तमान में जियो, अपनी चित्तवृत्तियों से लड़ो मत, उन्हें अजनबी बनकर देखो और कल्पना का भी यथार्थ के लिए उपयोग करो। आइंस्टीन से पूर्व शिव ने ही कहा था कि कल्पना ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

33. शिव और शंकर : शिव का नाम शंकर के साथ जोड़ा जाता है। लोग कहते हैं – शिव, शंकर, भोलेनाथ। इस तरह अनजाने ही कई लोग शिव और शंकर को एक ही सज्ञा के दो नाम बताते हैं। असल में, दोनों की प्रतिमाएं अलग–अलग आकृति की हैं। शंकर को हमेशा तपस्वी रूप में दिखाया जाता है। कई जगह तो शंकर को शिवलिंग का ध्यान करते हुए दिखाया गया है। अत: शिव और शंकर दो अलग–अलग सत्ताएं हैं। हालांकि शंकर को भी शिवरूप माना गया है। माना जाता है कि महेष (नंदी) और महाकाल भगवान शंकर के द्वारपाल हैं। रूद्र देवता शंकर की पंचायत के सदस्य हैं।

34. देवों के देव महादेव : देवताओं की दैत्यों से प्रतिस्पर्धा चलती रहती थी। ऐसे में जब भी देवताओं पर घोर संकट आता था तो वे सभी देवाधिदेव महादेव के पास जाते थे। दैत्यों, राक्षसों सहित देवताओं ने भी शिव को कई बार चुनौती दी, लेकिन वे सभी परास्त होकर शिव के समक्ष झुक गए, इसीलिए शिव हैं देवों के देव महादेव। वे दैत्यों, दानवों और भूतों के भी प्रिय भगवान हैं। वे राम को भी वरदान देते हैं और रावण को भी।

35. शिव हर काल में : भगवान शिव ने हर काल में लोगों को दर्शन दिए हैं। राम के समय भी शिव थे। महाभारत काल में भी शिव थे और विक्रमादित्य के काल में भी शिव के दर्शन होने का उल्लेख मिलता है। भविष्य पुराण के अनुसार राजा हर्षवर्धन को भी भगवान शिव ने दर्शन दिये थे। *(स्रोत : अज्ञात)*

॥ ॐ नम: शिवाय, हर हर महादेव जी ॥

कनक मंजरी छन्द में एक स्तुति

गिरि रज गंग तरंग छटा लिपटी सर जूट जटा धर जे
जय जय हे त्रिपुरासुर नाशक शम्भू नमामि महेश्वर हे

तन रम भस्म त्रिनेत्र धरे धरनी धर है अखिलेश्वर वे
लटकन कुंडल बिच्छुन लटके, डम नाद करें डमरू धर वे
दम दम दमके शशि भाल सदा कटि सोह रही बाघम्बर जे
चढ़ वृष राज सदा शिव आज हरे मद मोह मनोहर वे

जिन कर शूल त्रिशूल हरे भव मूल विमूलन के हरि हे
जय जय हे त्रिपुरासुर नाशक शम्भू नमामि महेश्वर हे

नित प्रति चाउर चार चढ़ा अरु बेर धतूरन भोग लगा
हर हर बोल बजा नर गाल सदा शिव शंकर योग जगा
तिन यम दूत पिशाच डरें रसना जिनकी बम रोग लगा
विधि हरि संग सुरेश खड़ें कर जोरत आपन जोग जगा

रवि शशि पावक पालक जे अरु काल करालन ईश्वर हे
जय जय हे त्रिपुरासुर नाशक शम्भू नमामि महेश्वर हे

जनि जगदम्ब अबेर करो अविलम्ब गुहार करो शिव से
पल पल बीत रहा अब है उर के उद्गार कहो शिव से
मन तरसे तन तीस भया सुर के सब सार कहो शिव से
हट सुत की सुन री जननी तुम नैन विचार कहो शिव से

लिपि विधि मेटत वेद कहें जय हो जय हो शिव शंकर हे
जय जय हे त्रिपुरासुर नाशक शम्भू नमामि महेश्वर हे

(सादर सौजन्य चिदानंद शुक्ल)

॥ आरती ॥

कर्पूरगौरं करूणावतारम, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

कर्पूर जैसा गौर रंग है जिनका गल सर्प का हार
करुणा के वे अवतार हैं संसार का यह है सार
बसंत की भांति हृदय वास कर लाते सर्वदा बहार
मां भवानी सहित भावेश करता नमन बारम्बार॥

जय शिव ओमकारा, भज शिव ओमकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥
ॐ हर हर हर महादेव

एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजै॥
ॐ हर हर हर महादेव

दो भुज चारुचतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥
ॐ हर हर हर महादेव

अक्षमाला वनमाला रुन्दमाला धारी।
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी॥
ॐ हर हर हर महादेव

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर धारी ॥
संकादिक गरुड़ादिकभूतादिक संगे।
ॐ हर हर हर महादेव

कर मध्येसुकमंडल चक्र त्रिशूल धरता।
सुखकर्ता दुखाकर्तासुख में शिव रहता ॥
ॐ हर हर हर महादेव

काशी में विश्वनाथ विराजे नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ ज्योत जलावत दिन-दिन अधिकारी ॥
ॐ हर हर हर महादेव

त्रिगुणास्वामी की आरती जो कोई नर गावे
ज्योरे मन शुद्ध होय जावे, ज्योरे पाप परा जावे
ज्योरे सुख सम्पति आवे, ज्योरे दुःख दारिद्य जावे
ज्योरे घर लक्ष्मी आवे, भनत भोलानंद स्वामी
रटत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ॥
ॐ हर हर हर महादेव

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

परिचय

सुरेश चौधरी `इंदु'

पिता का नाम : स्व. भोलाराम चौधरी

माता का नाम : श्रीमती दुर्गावती चौधरी

जन्म स्थान : जमशेदपुर (वर्तमान में झारखंड)

जन्म तिथि : 14 जुलाई, 1952

शिक्षा : विज्ञान में स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, एकोल सुपेरियारे रोबर्ट दी सौबोर्न फ्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद; जीवन वृतांत : शिक्षा उपरांत 5 वर्ष तक उषा मार्टिन ग्रुप एवं बिरला ग्रुप में कार्य, तत्पश्चात निजी इस्पात के कुल 18 कारखाने बड़ोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेदपुर, चांडिल, बड़बिल, कोलकाता में लगाये। 2008 से आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्यरत, लेखन में रूचि 2010 के पश्चात्। 2011 में स्वास्थ्य के चलते सभी कार्य छोड़कर केवल अध्ययन एवं लेखन की ओर झुकाव। तब से नियमित लेखन एवं शोध कार्य, यात्रा वर्णन, बाल कविता, काव्य, आलेख (शोध वैदिक सनातन दर्शन) एवं आर्थिक विषय पर, अध्यात्म में विशेष रुचि।

सम्मान :

1. इस्पात में विशेष कर स्टेनलेस स्टील के उत्थान में विशेष योगदान हेतु ''भारत गौरव'' सम्मान प्राप्त।
2. विद्या वाचस्पति सम्मान (विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ)।
3. पश्चिम बंगाल के राज्यपाल द्वारा केंद्रीय राजभाषा समिति का राजभाषा गौरव सम्मान प्राप्त।
4. अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साहित्य शिखर सम्मान। (पूर्व में यह सम्मान नीरज जी, वाजपेयी जी, डॉ. कर्ण सिंह इत्यादि को दिया गया)
5. प्रसिद्ध आचार्य चाणक्य सम्मान (संघ की पत्रिका चाणक्य वार्ता ग्रुप द्वारा) महामहिम राज्यपाल जगदीश जी धनखड़ द्वारा श्रेष्ठ साहित्यकार हेतु।
6. बिहार साहित्य सम्मेलन जो कि बाबू राजेंद्र प्रसाद ने स्थापित की है, द्वारा साहित्य मार्तण्ड सम्मान।

पुस्तकें :

कुल 30 पुस्तकें प्रकाशित, कई अन्य प्रकाशन के क्रम में। इनमें अनुवाद, काव्य, शिक्षा, आर्थिक, अध्यात्म विवेचना इत्यादि हर विषय पर है।

1. श्री दुर्गातिविनाशिनी, 2. प्रांजलि, 3. स्वरांजलि, 4. कुछ माणिक कुछ मोती, 5. वेद से वेदांत तक (9 उपनिषदों एवं वेदों के दो प्रमुख सूक्तों को नए काव्य), 6. आदि शंकर रस माधुरी, 7. भावांजलि, 8. हर हर महादेव, 9. सुभाषितम, 10. भारतीय दर्शन, 11. भारत के अन्य दर्शन, 12. वैदिक सनातन धर्म (शोध प्रथम कड़ी), 13. बुलबुले सी जिंदगी, 14. तिमिर ढलेगा, 15. महावाक्य, 16. गोपी गीत, 17. काव्य संहिता, 18. भ्रम भ्रामक भ्रांतियां, 19. मूल्यांकन, 20. एक्सीडेंटल टूर इन हाइबरनेशन, 21. सुरतरिंगिनी, 22. मनुस्मृति समीक्षा, 23. वेदों का परिचय, 24. श्रीमद् भागवत महापुराण समीक्षा, 25. अड़सठ शरद, 26. हे माँ, 27. ऋचाओं से पावन माँ, 28. चमत्कृत करती भाषा संस्कृत, 29. हे गोविंद हे गोपाल, 30. बून्द बून्द सागर।

भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के acedemia.edu नामक ब्लॉग में नियमित रूप से आलेखों का प्रकाशन।

लोगों के विचार :

दीपक नगाइच रोशन-प्रख्यात ग़ज़लकार :

आपकी रचना को पढ़कर सदैव ही ये अनुभव हुआ है कि जब तक आप जैसे रचनाकार हिंदी भाषा की नि:स्वार्थ सेवा करते रहेंगे, हिंदी भाषा का वर्चस्व कायम रहेगा.....

आपकी रचनाओं की एक-एक पंक्ति बहुत ही रुचिकर, अर्थपूर्ण, सुंदर भावों और सार्थक संदेशों को अपने आप में समाहित किये हुए होती है। कमाल की कलमकारी और बेहतरीन शब्द संयोजन...एक उत्कृष्ठ और अद्भुत सृजन।

सोहन सलिल-प्रसिद्ध गीतकार

प्रणाम स्वीकार करें आदरणीय सुरेश चौधरी साहब। आपकी कविताओं को पढ़कर लगता है कि मैं पुन: विश्व विद्यालयीन पाठ्यक्रम में पहुँच गया हूँ। आज के समय में जब हिंदी साहित्य घोर उपेक्षा के दौर से गुजर रहा है तब आप जैसे कविवरों की रचनाओं को साहित्य कोष में श्रीवृद्धि करते हुए देखना सुखद लगता है। अशेष शुभकामनाओं के साथ सादर नमन्।

दीपिका द्विवेदी-प्रसिद्ध कवयित्री

आज समझ में आया है तुलसी के सामने क्या कशमकश रही होगी तब जाकर उन्होंने ''गिरा अनयन नयन बिनु वाणी'' कहा होगा!!! तारीफ करने की हिम्मत ही नहीं है, क्योंकि सूर्य को दीपक दिखाना मेरी फितरत नहीं है सर! हाँ, इतना अवश्य कहूंगी कि अपना आशीर्वाद सदा बनाए रखिएगा, जिससे हम विस्मृत ज्ञान को फिर स्मृति पटल पर ला सके एवं नवीन ज्ञान को ग्रहण कर सके....

ओम नीरव-छंद विशेषज्ञ, साहित्य मनीषी

आपकी उत्कृष्ठ रचना मेरी दृष्टि में हिंदी साहित्य की एक अनमोल धरोहर है। आपकी लेखनी को नमन्! सप्रेम।

सिया सचदेव-प्रख्यात शायरा

आदरणीय भाई साहब! आपकी रचनाओं में अध्यात्म है, पवित्रता है। मैं अक्सर पढ़ती हूँ। मेरे मन में आपके प्रति बहुत सम्मान है। आपका स्नेह और आशीर्वाद बना रहे।

रजनी मूंधड़ा-गीतकारा, गायिका

सच्चे साहित्य साधक एवं श्रेष्ठ रचनाकार होते हुए भी सभी की रचनाओं एवं रचनाकार का सम्मान करना सरल विनम्र रहना आपका बहुत बड़ा गुण है। आप जैसे साधक की हर युग में आवश्यकता है।

भीमराव झरबड़े-साहित्यकार

आदरणीय आपका व्यक्तित्व तो विस्तृत ज्ञान के अथाह सागर की तरह है।

डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ', भूतपूर्व प्रधान मुख्य सचिव, हिमाचल

आप मेरे मित्र और अद्‌भुत व्यक्तित्व के मालिक हैं-विद्वान व सहृदय।

चंद्रिका प्रसाद पांडेय 'अनुरागी'-प्रख्यात गीतकार

आप संस्कृतनिष्ठ, वैदिक, आध्यात्मिक, शास्त्रों के ज्ञाता, आधुनिक साहित्य से जुड़े आज के पितामह भीष्म।

गुरुमुख दास कटारिया-धर्मानुयायी

ऐसे तो आप ज्यादातर श्रीकृष्ण जी पर कविता और दोहे लिखते हैं तथा हमारी हिंदू संस्कृति पर भी लिखते हैं, परंतु कभी-कभी श्री गुरु ग्रंथ साहिब पर अनुवाद करते हैं, वह भी बहुत अच्छा लगता है। मैं कभी-कभी सोचता हूं कि आप वही 10-20 साल पहले वाले सुरेश जी हैं। अब तो आपके चेहरे का नूर देखकर तथा आपकी वाणी और शब्दों में अध्यात्म की झलक दिखती और महसूस होती है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि भगवान आपको और बरकत दें।

अल्पना सिंह-चर्चित कवयित्री

आप साहित्य के विद्वान और प्रकांड विद्वान हैं। संस्कृत और हिंदी भाषा पर आपका समान अधिकार है। साहित्य के शुद्ध विशुद्ध प्रेमी हैं। निरंतर अध्ययन में लगे रहते हैं। अपने मौलिक सोच-विचार को काव्य के रूप में प्रकट करते हैं।

आपका व्यक्तित्व अनुकरणीय है। आप उम्र के इस पड़ाव में, रोग ग्रसित होते हुए भी कर्मठता के जीवंत उदाहरण हैं। आप जैसा व्यक्तित्व परिवार, समाज, राष्ट्र, मानव जगत के लिए प्रेरणास्रोत है। आपको शत्-शत् नमन्! आप इस युग के प्रेरणा पुरुष हैं।

रवि प्रताप सिंह-राष्ट्रीय अध्यक्ष, शब्दाक्षर

आप अपने आप में एक उदाहरण हैं। जहां तक मेरी जानकारी है प्रो. श्यामलाल उपाध्याय जी के देहावसान के पश्चात कोलकाता में आपके अलावा संस्कृतनिष्ठ हिंदी का इतना समृद्ध कवि कोई नहीं। मातृ-पितृ भक्ति क्या होती है, कोई आपसे सीखे। मैं तो सार्वजनिक रूप से आपको बंगाल का श्रवण कुमार कहता हूं। सौभाग्यशाली हूं कि आपका सान्निध्य और स्नेह प्राप्त है।

OOO